

(□□□ :- □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ **21** □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□
18 □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□)

□□□□□□□-आइये, हम विवाह की वधि प्रारंभ करें वृष्या सभी शांतपूर्वक अपना स्थाण ग्रहण कर लें तार्क
आराधना की गरमाि बनी रहे

जब वधु प्रवेश करती है तो हम खड़े होकर गीत क्रमांक-----गांगे

□□□- जब पहली शादी हुई **1.** जब पहली शादी हुई अदन में ईश्वर ने आशीष के वचन कहे

आदम और हवा से

2. यों अब हमारे बीच केवविवाह में ईश्वर है तीन आशीष देना चाहते

तेजवान पवतिर त्रय

3. हो बालकदान के लार् प्रेम और वशि वस् तता हे प्रभु क्ता दे दे

करिहें संग सदा

4. यह वधू तू हे पति इस वर के हाथ में दे जैसे की पत्नी दी थी

आदम के तू ही ने

5. हे यीशु इनके हाथ और ह्रदय भी अब तू जोड़ और दुःख सुख कुशल रोग में कभी उनके न
छोड़

6. और

हे पवतिर आत्मा

तू उन पर उतर आ

करि प्रेम और मेल के साथ ये

मलि के रहें सदा

7. बुराई से बचा के

इन क सहायक हो

और अपने स्त्री वर्गीय राज् य में
दे जगह दोनों के

नोट:- (वधु वर केबा' हाथ की ओर खड़ी हो' दोनों केमुख वेदी की ओर हो')

□□□□□□□ -हम यहां परमेश् वर की उप स्थिति में इस क्लीसिया के सामने क्तरति हु है कि इस युवक----- (नाम) और इस युवती ----- (नाम) क पवतिर ववाह करें' यह क प्रतष्ठिति कर्य है जिसकी स् थापना स् वयं परमेश् वर ने की क्मनुष् य अकेला न रहें वं उसकी शारीरकि आवश् यक्ताओं की पूरतिपरमेश् वर द्वारा नरिधारति सीमाओं केअन् तरगत हो' प्रभु यीशु मसीह ने स् वयं गलील केकना नगर में सम् पन् न होने वाले ववाह में उपस्थति होकर इस कर्य के सुशोभति वं सम् मानति कया' पौलुस प्रेरति भी इसकी प्रशंसा में कहता है-

“

ववाह सब मनुष् यों में आदर की बात समझी जाये'
”

इसलिये कोई बनिा वचारे और मन केघृणति भाव से इसे अंगीकर न करे वरन् ववाह केठहराये जाने के करणों के सही रूप में समझ कर आदर और सचेतता और परामर्श और संयम और ईश् वर केभय से अंगीकर करे'

□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ -

परमेश् वर केन् याय केदनि में जब सब केमनों केभेद खोले जा'गे, तुम् हैं उत् तर देना होगा, इसलिये मै तुम दोनो के दृढ़ आज्जा देता हूं कि यदिव् यवस् था केअनुसार तुम लोगों केववाह होने में कुछ बाधा हो तो उसे अभी अंगीकर करो क् योंकि मै तुमसे नश् चय कहता हूं कि जतिने ईश् वर केवचन की सम् मत केवरूद्ध ववाह में जोड़े जाते हैं वे ईश् वर से जोड़े हु नहीं है' और उनक ववाह भी उसकी व् यवस् था के अनुसार उचति नहीं है'

□□ □□□□□□□ □□ □□□□ -□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ -

मै ----- (नाम) सत् य कहता हूं कि ----- (नाम) की इस युवती के

साथ व् यवस् था के अनुसार मेरा ववाह न हो ऐसी कोई बाधा मै नहीं जानता हूं

□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□
—

मैं ----- (नाम) सत् य कहती हूं क् ----- (नाम) के इस युवक के साथ
व् यवस् था के अनुसार मेरा ववाह न हो सके ऐसी कोई बाधा मै नहीं जानती हूं

□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ — यदि कोई इस सभा में ऐसा
योग् य कारण जानता हो जिसके कारण ये दोनों मसीही धर्म और भारत सरकार
के नियमों के अनुसार इस पवतिर ववाह में नहीं जोड़े जा सकते हैं तो अभी
सभों पर प्रगट करे वरना परमेश् वर केन् याय के दनि तक जबक् सभों के
हरदय के भेद खोले जाँगे चुप रहे

(□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□□□
□□□□ □□□□)

□□□□□□□ - कौन इस स्त्री के इस पुरुष के हाथ में देता है?
(वधु के पति खड़े हों तथा वधिवित वधु का दाहिना
हाथ वर के दाहिने हाथ में दें)

□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□
□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□

□□□□ -□□□□ □□□ □□□ मैं (नाम) इस
सभा के लोगों को साक्षी करके कहता हूँ, कि ईश्वर के सामने,
और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के नाम से, मैं तुम
(नाम) को अपनी विवाहिता पत्नी होने को ग्रहण करता हूँ,
और वचन देता हूँ कि दुःख में और सुख में, सम्पत्ति में
और दरदिरता में, रोग में और आरोग्यता में, तुम्हें आज
से आगे को अपनी कर रूखूंगा

—

और तुमसे मिला रहूंगा

—

और जब तक मृत्यु हम दोनों को अलग न करे, तब तक

ईश्वर के पवित्र नियम के अनुसार, तुम से प्रेम रखूंगा,
और तुम्हारी सुधिलुंगा मैं वशिष्ठ वासपूर्वक तुमसे यह
प्रतिज्ञा करता हूँ

□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□
□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□
□□□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ -

मैं (नाम) इस सभा के लोगों के साक्षी
करके कहती हूँ, कि ईश्वर के सामने, और प्रभु यीशु
ख्रीष्ट के नाम से, मैं तुम (नाम) के
अपना विवाहति पति होने के स्वीकार करती हूँ, और
वचन देती हूँ कि दुःख में और सुख में, सम्पत्ति में
और दरिद्रता में, रोग में और आरोग्यता में, तुम्हें
आज से आगे के अपना कर रखूंगी - और तुमसे मिली
रहूंगी

—

और जब तक मृत्यु हम दोनों के अलग न करे, तब तक
ईश्वर के पवित्र नियम के अनुसार, मैं तुम से प्रेम

रखूंगी, और तुम्हें हारी सुधा लूंगी मैं वशिष्ठ वासपूर्वक
तुमसे यह प्रतर्जिजा करती हूँ

(□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□
□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ -□□□□□
□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□)

□□□□□□□□□□— हे सनातन काल के ईश्वर,
सारी उत्तम आशीषों के दाता हम इस समय

तुझसे प्रार्थना करते हैं कि जब इन युवाओं ने तेरी

वेदी के सम्मुख मुख और तेरी क्लीसयिा की उपस्थिति में जो प्रतज्जिा की है, ये इन् हैं आजीवन याद रखें वविाह के इन प्रतीकचन् हों पर तेरी आशीष हो ताकी ये चन् ह इन् हैं इन प्रतज्जिाओं क स् मरण दलिाते रहें पतिा परमेश् वर इनके हर पल यह ध् यान रहे की तेरा वचन सत् य है, तेरी वाचा अटल है और तेरी आशीष अपरम् पार है यद हिम वशि वासयोग् यता क जीवन जिा ये प्रतीक चन् ह इन् हैं तेरी इस वाचा क स् मरण दलिाते रहें इनक प्रेम और क्ता तुझमें सुरक्षति रहे तेरे नियमों के अनुसार ये जीवन व् यतीत करें इस प्रार्थना के हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से मांगते हैं आमीन!

(□□□□ □□□□□□□□ □□, □□□□ □□
□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□
□□□□) □□□□□□□□□□ □□

□□□□-□□□□□□ □□ □□□□- इस
छल्□ ले से मैं तुम्□ हैं ब्□ याहता हूं, अपनी देह
से मैं तुम्□ हारी प्रतष्ि□ ठा करता हूं और अपनी
सारी सांसारकिसम्□ पत्तुतुम्□ हैं देता हूं□
पति, पुत्र और पवतिर आत्□ मा के नाम से,
आमीन!

(□□ □□□□, □□ □□ □□□□□ □□□□ □□
□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□)
□□□□□□□□ □□ □□□□□ -□□□□□ □□□
□□□ -

इस छल् ले से मै तुम् हैं ब् याहती हूं, अपनी
देह से मै तुम् हारी प्रतष्ि ठा करती हूं और
अपनी सारी सांसारकि सम् पत्तितुम् हैं देती
हूं

पति, पुत्र और पवतिर आत् मा के नाम से,
आमीन!

□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ -

जबर्क..... (नाम)

और..... (नाम) वविह में

सहमत हु है और ईश् वर और मंडली के

सामने इस बात का अंगीकार भी किया है और इस पर □ कदूसरे के अपना-अपना वचन दिया है और छल□ ले के देने और लेने से और हाथों के मलाने से इसे प्रगट किया है, इस कारण इस क्लीसिया का सेवक होने के नाते और भारतीय क्रिश्चियन मैरिज □ क् ट के अंतर्गत दिये गये अधिकार से मैं उनके पति और पत्नी कहता हूँ- पति, पुत्र और पवति आत्□ मा के नाम से, आमीन!

जैसे ईश□ वर ने जोड़ा है उसके कोई मनुष्□ य अलग न करे□

□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□
□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ -

ईश्वर वर पति, ईश्वर वर पुत्र और ईश्वर वर
पवतिर आत्मा मा तुमके आशीष दे, तुमके
बचाये रखे तथा तुम्हारी रक्षा करे प्रभु
अनुग्रह करके तुम पर दया दृष्टि करे और
तुम्हें सब आत्मिक आशीषों से और अनुग्रह
से ऐसा परपूर्ण करे कि तुम इस लोक में एक
साथ ऐसा जीवन निर्वाह करो कि परलोक में
अनन्त जीवन प्राप्त करो आमीन!

(□□ - □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□)

□□□□□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□

□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ -

(वेदी के सामने दो छोटी मोमबत्ती जली हुई
और बीच में एक बड़ी बुझी हुई मोमबत्ती
रखें)

□□□□□□□□ -ये दो अलग-अलग
 मोमबत्तियां वर..... (नाम) और
 वधु..... (नाम) के दो भन्निं न
 जीवनो क प्रतनिधित्तिं व करती हैं अब तक
 इनके वचार, योजनां, रूचियां भन्निं न-भन्निं न
 थें आज से ये दो नहीं कन्निं तु प्रभु में क
 हुं हैं अतः अब से ये परिवार की क्ता,
 शांतिं वं आनन् द हेतु स् वयं के लर्ति नहीं
 कन्निं तु क दुसरे के लर्ति सोचेंगे पारस् परकि
 क्ता, प्रेम, सहयोग वं सद्भावना के द्वारा
 ये प्रभु यीशु मसीह की ज् योति से अपने
 परिवार, क्लीसिया वं समाज के आलोकति

करेंगे□

प्रतीकत्□ मकरूप से इस अभिप्राय के प्रकट करते हु□ ये अपनी-अपनी मोमबत्□ ती से □ कत्ता की मोमबत्□ ती जला दें और अपनी-अपनी मोमबत्तियां बुझा दें□

□□□□□□ □□□ - (पवतिर शास्□ त्र में से ववाह के वषिय में कुछ प्रमुख सन्□ दर्भ क पठन किया जा□ गा□

“

इस कारण पुरुष अपने माता पति से अलग होकर

अपनी पत्नी के प्रति आसक्ति होगा और वे दोनों एक तन होंगे? फलतः अब वे दो नहीं; परन्तु एक तन हैं। इसलिये जसै परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।”

(□□□□□□ 19:5-6)

“जो पत्नी पाता है, वह उत्तम वस्त्र तु पाता है, और यहोवा से अनुग्रह प्राप्त करता है।”

(नीतविचन 18:22)

“

भली पत्नी कौन पा सकता है? उसका मूल्य तो मूँगों से भी बढ़कर है। उसके पति के मन में उसके प्रति विश्वास है, और उसे लाभ की घटी न होगी। वह अपने जीवन के सारे दिनों में उसके प्रति बुरा नहीं पर भला ही व्यवहार करती है। वह ऊन और सन ढूँढ़ती है, और हर्ष के साथ अपने हाथों से काम करती है।

”

(नीतिविचन 31:10-13)

“

वह अपनी ग्रहस् थी के सब मामलों पर ध् यान रखती, और परश्रिम क्यै बना रोटी नहीं खाती। उसके बच् के उठकर उसे धन् य कहते हैं। उसका पति भी यह कह कर उसकी प्रशंसा करता है : बहुत-सी स् त्रि यों ने अच्छे-अच्छे कार्य तो क्यै हैं, परन् तु तू उनमें से श्रेष् ठ है। आकर्षण तो झूठा और सुन् दरता व् यर्थ है, परन् तु जो स् त्री

यहोवा का भय मानती है, उसी की
प्रशंसा होगी। उसके हाथों का फल उसे
दो, और नगर-द्वारों में उसके कार्यों से
उसकी प्रशंसा हो।

”

(नीतविचन 31:27-31)

“

परन्तु तु जनिमें आत्मा का कुछ
प्रभाव रह गया है उनमें से कने
भी ऐसा नहीं किया। और ऐसों ने
परमेश्वर का भय मानने वाली

सन्तान पाने के लिये क्या?
इसलिए तुम में से कोई अपनी
जवानी की पत्नी से विश्वास
घात न करे।
”

(मलाकी 2:15)

“

अकेले व्यक्ति पर कोई तो
प्रबल हो सकता है, परन्तु दो

होने से वे उसका सामना कर सकते
हैं। तीन लड़कियों से बंटी
रसूँ सी जलूँ दी नहीं टूटती।
”

(सभोपदेशक 4:12)

“

हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी
से प्रेम करो जैसा मसीही ने भी
कलीसिया से प्रेम किया और

अपने आप के उसके लीं दे
दियां कि उस के वचन के द्वारा
जल के स्नान से शुद्ध करके
पवित्र बना, और उसे क
ऐसी महामायुक्ती क्लीसिया
बनाकर प्रस्तुत करे, जसिमें न
कलक, न झुर्री, न इनके समान
कुछ हो, वरन् पवित्र और
नरिदोष हो। इसी प्रकार उचति

है कपिता भी अपनी पत्नी से
अपनी देह के समान प्रेम करे
जो अपनी पत्नी से प्रेम करता
है वह स्वयं अपने आप से
प्रेम करता है कोई अपनी देह
से घृणा नहीं करता, वरन् उसका
पालन-पोषण करता है, जैसे क
मसीह भी क्लिसिया का
पालन-पोषण करता है, क् योंक

हम उसकी देह के अंग हैं। अतः
मनुष्य। य अपने माता-पिता के
छोड़कर अपनी पत्नी से मिला
रहेगा और वे दानों। कतन
होंगे। यह रहस्य। य तो महान् है
पर मैं य। ह बात मसीह और
कलीसिया के सदस्य में कह रहा
हूँ। अतः तुम में से प्रत्येक
अपनी पत्नी से अपने समान

प्रेम करे, और पत्नी भी अपने
पति का भय माने

”

(इफ़सियों 5:25-33)

“

इसी प्रकार, हे पत्नियों, अपने
अपने पति के अधीन रहो जसि
से यदि उनमें से कुछ वचन का
पालन न करते हों तो वे

तुम्हारे पवतिर और
 सम्मानीय चाल-चलन के
 ध्यानपूर्वक देखकर वचन
 बना ही अपनी-अपनी पत्नियों
 के व्यवहार से जीते जाते हैं।
 तुम्हारा श्रंगार केवल
 दिखावटी न हो, जैसे बालों के
 गूथना, सोने के आभूषण, और
 वभिन्न प्रकार के वस्त्र

पहनिना, वरन् यह तुम्हारा
आंतरिकीय यक्षति व हो, जो
नम्र और शान्त मन वाले
अवनिशी आभूषणों सुसज्जता
हो, जसिक परमेश्वर में की
दृष्टि में बड़ा मूल्य है
की योंकि पूर्वकाल में पवतिर
स्त्रियां भी
जो परमेश्वर में आशा

रखती थीं अपने अपने पतियों के
आधीन रहकर अपने को इसी
रीति से सजाती-संवारती थीं।
इस प्रकार सारा, इब्राहीम के
सुलामी कहकर उसके आधीन
रहती थीं। यद्यत्तुम भी बना
भयभीत हुए। वही करो जो
उचित है तो उसकी बेटियां
ठहरोगी। इसी प्रकार, हे

पतयिों, तुम में से प्रत्ेक
अपनी पत्ेनी के साथ
समझदारी से रहे, उसे नर्बल
पात्र जाने, क्े योंक वह
स्े त्री हैे वह जीवन के
अनुग्रह में संगी वारसि जान
कर आदर करे, जसि से
तुम्े हारी प्रार्थना में बाधा न
पहुंचेे

”

(□□□□ 3:1-7)

□□□□□ -

□□ □□□□ □□

□□□□□□□ □□□□□□□□

□□ □□□

□□□□□ □□

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □

1

□ □ □ □ □ □ □ : ■ ■

□ □ □ □ □ □ □ □ □

5:22-25

□□□□□□□□ -परमेश्वर
के वचन में आदर्श मसीही
परिवार का समीकरण बहुत
स्पष्ट बताया गया है
किसी भी समीकरण में
जोड़ने, घटाने, गुणा करने

अथवा भाग देने की बात
होती है उसी प्रकार मसीही
परिवार में भी यही
आधारभूत बातें लागू होती
हैं।

1. 0 0 0 0 0 0 0 0

0 0 0 0 0 (

Addition):-

मसीही परिवार में मात्र

पति-पत्नी ही नहीं

कन्ति तु सर्वप्रमुख

परमेश्वर होता है

परमेश्वर हमारे जीचनों

और परिवारों में प्रथम
स्थान चाहता है जहां
परमेश्वर का प्रथम
स्थान होता है वहां संबंधों
में परपिक्वता एवं
स्थायित्व होता है

सभोपदेशक 4:12 में
लिखा हुआ है कि "अकेले
व्यक्ति पर कोई तो
प्रबल हो सकता है,
परन्तु दो होने से वे
उसका सामना कर सकते
हैं। तीन लड़कियों से बंटी
रसूरी जल दी नहीं

टूटती

”

मसीही परिवार में तीन
डोरियां परमेश्वर,

पति-पत्नी के रूप में
होती है। अतः मसीही
परिवार के समीकरण में
पहला सूत्र यही है कि
हमें परिवार में
परमेश्वर के जोड़ना
है। परमेश्वर के

जोड़ने का अर्थ है कि
प्रतिदिन का प्रारंभ
प्रार्थना एवं वचन के
मनन से हो, प्रति
सप्ताह का प्रारम्भ
कलीसिया की आराधना में
उपस्थिति होने से हो

और प्रत् येक माह क
प्रारम्भ परमेश्वर
के अनुसार अपनी आय
क कम से कम दशमाशं
भेंट के रूप में अर्पति
करने से हो वचन में
लिखा है “तू सम्पूर्ण

हृदय से यहोवा पर
 भरोसा रखना, और
 अपनी समझ का सहारा न
 लेना। उसी के स्मरण
 करके अपने सब कार्य
 करना, तब वह तेरे लिये
 सीधा मार्ग निकलेगा।

अपनी दृष्टि में तू
बुद्धिमान न बनना
यहोवा का भय मानना,
और बुराई से वमिख
रहना। ”

(नीतविचन 3:5-7)

“□ कसे दो अच्□ छे
है, क्□ योंक उनके उनके
परशिरम क अच्□ छा
प्रतफिल मलिता है□
क्□ योंक यदि उनमें से
□ कगरि तो दूसरा अपने
साथी के उठा□ गा□

परन्तु उस पर हाथ
किया जब वह अकेला गरि
तो उसके उठाने वाला
कोई दूसरा न हो
अकेले वह यक्षा पर
कोई तो प्रबल हो सकता
है, परन्तु दो होने से

वे उसका सामना कर
सकते हैं। तीन
लड़कियों से बंटी
रसूँ सी जलूँ दी नहीं
टूटती। ”

(सभोपदेशक

4:9-10, 12)

2. 0 0 0 0 0 0 0

0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0

0 0 0 (Sub traction):-

मसीही ववाह के

समीकरण क दूसरा

सूत्र है कि हमें अपने
परिवार से नकरात् मक
बातों के घटाना है
दूसरों की कमजोरियां
बहुत आसानी से
दखिाई देती है, और

संसार में रहते हुए
नकरात् मक
मानसक्ति का परविाद
है मसीही परिवार के
सुदृढ़ बनाने के ली
आवश्क यक है क हम

अपने चन्ि तन में
नकरात् मक बातों के
आने न दें इसल
पौलुस फलिप्पियों की
पत्री में **4:8** में
लिखता है कि

“

अतः हे भाइयों, जो
जो बातें सत्य हैं,
जो जो बातें आदरणीय
हैं, जो जो बातें
न्यायसंगत हैं, जो

जो बातें मनोहर हैं, जो
जो बातें मनभावनी हैं,
अर्थात् जो जो उत्तम
तथा प्रशंसनीय गुण
हैं, उन्हें ही क ध् यान
किया करो।

”

3. □ □ □ □ □ □ □ □

□ □

□ □ □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ (

Multiplicatio n) :-

मसीह परिवार के

समीकरण में तीसरा

प्रमुख सूत्र प्रेम के
गुणाति अनुपात में
बढ़ाने का है। प्रेम
के परिभाषित करना
आसान नहीं है।
प्रेम का

सर्वोत्कृष्ट
विवरण परमेश्वर
के वचन में
1 कुरान्थियों
13:4-8 में पाया
जाता है जहां इस

प्रकार लिखा है कि

“

प्रेम धैर्यवान है,
प्रेम दयालु है और
वह ईर्ष्या या नहीं

करता ॥ प्रेम डींग
नहीं मारता, अहंकार
नहीं करता ॥ अभद्र
व् ॥ यवहार नहीं
करता, अपनी भलाई
नहीं चाहता,

झुंझलाता नहीं, बुराई
का लेखा नहीं रखता,
अधर्म से आनन्दति
नहीं होता, परन्तु
सत्तु य से आनन्दति
होता है सब बातें

सहता है, सब बातों
पर वशिष्ठ वास करता
है, सब बातों की
आशा रखता है, सब
बातों में धैर्य रखता
है। प्रेम कभी मटिता

नहीं□ नबूवतें हों तो
समाप्□ त हो जा□ंगी,
भाषा□ हों तो जाती
रहेगीं, और ज्ञान
हो तो लुप्□ त हो
जा□ गा□

”

यदि हम
वास्त्वं तव में प्रेम
करते हैं तो हममें
यह सारे गुण

अर्थात् कृपालु,
धैर्यवान, घमंड
रहति, सहनशील,
संयमी और
सत् यत्ता पर चलने

वाला, होना

चाहिए। इन्हीं

बातों में आगे बढ़कर

हमारा प्रेम

परिष्कृत होता है।

प्रभु यीशु मसीह ने
स्वयं क उदाहरण
देते हुए कहा कि
पति को पत्नी से
वैसा प्रेम रखना

चाहतीं जैसा

स्वयं वयं उसने

कलीसिया से रखा कि

कलीसिया के ली

अपना सर्वस्व व

न् योछावर कर
दिया वचन में
लिखा है “हो
पत्नियों, अपने
अपने पता के ऐसे

अधीन रहो जैसे क
प्रभु के अधीन हो
की योंकि पति तो
पत्नीक सरि है,
जसि प्रकार मसीह

भी क्लीसिया क
सरि है और स् वयं
देह क
उद्धारकर्ता है
पर जैसे क्लीसिया

मसीह के अधीन है,
वैसे ही पत्नियां भी
हर बात में अपने
अपने पति के अधीन
रहें। हे पतियों,

आपनी अपनी पत्नी
से प्रेम करो जैसा
मसीह ने भी
कलीसिया से प्रेम
किया और अपने

आप को उसके ली
दे दिया कि उस को
वचन के द्वारा जल
के स्नान से शुद्ध
करके पवित्र बना ,

और उसे [] कएसी
महामायुक् [] त
कलीसयिा बनाकर
प्रस् [] तुत करे,
जसिमै न कलंक, न

झुर्री, न इनके
समान कुछ हो, वरन्
पवतिर और नरिदोष
हो। इसी प्रकार
उचति है कपति भी

आपनी पत्ना से
आपनी देह के समान
प्रेम करे जो
आपनी पत्ना से
प्रेम करता है वह

स्वयं वयं अपने आप
से प्रेम करता है
अतः तुम में से
प्रत्येक अपनी
पत्नी से अपने

समान प्रेम करे,
और पत्नी भी
अपने पति का भय
माने।
”

(इफ़सियों

5:22-29, 33)

4. □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □ □

(Division):-

मसीही परिवार क
चौथा प्रमुख सूत्र
है भाग देना या

डिवीज़न

सभोपदेशक

4:9-10 में

लिखा है

“

कैसे दो अच्छे
हैं, क्योंकि उनके
उनके परिश्रम का
अच्छा प्रतिफल
मिलता है।

क् योंक यदि उनमें
से क गरि तो
दूसरा अपने साथी
को उठा गा
परन्तु उस पर

हाय क जब वह
अकेला गरि तो
उसके उठानेवाला
कोई दुसरा न हो।
”

परमेश्वर की
दृष्टि में मनुष्य य
का अकेले रहने से
बेहतर दो लोगों का
साथ है। आज के

संसार में अकेलापन

□ कबड़ी

समस्□ या है□

जीवन में हमके

बांटना सीखना है,

अपनी
ज़ाँ म् मेदारियों
के हमें क दूसरे
के साथ बांटना
सीखना है।

□ □ □ □ □ □ □ □ □

□ -

मसीही परिवार में

जाँ म् मेदारियों

के समुचित रूप से

बांटना है। किसी ने
कहा है कि पति का
प्रमुख कार्य राह
बनाना होता है
और मां का कार्य

राह पर बच्चे चों
के चलना सिखाना
होता है कि या
कपहयि से कोई
गाड़ी चल सकती

है? क् या क

पंख से कोई प्राणी

उड़ सकता है?

क् या क हाथ से

कोई भारी वस्त् तु

उठा सकता है?

क्या कहथेली

से कोई कर्तल

धुना निकल

सकता है?

पति-पत्नी के
जीवन के
दुःख-सुख में
साथ चलना
सीखना है।

आधुनिक युग में
आज की कहानियां,
चल-चित्र,
टेलीविज़न के
सीरियल संभवतः

परिवार का सही

चित्र प्रदर्शित

करने में असफल

रहे हैं। क

आदर्श मसीही

परिवार का सही
चित्र वचन में
मलिता है।
परमेश्वर के
वचन के अनुसार

ही मसीही परिवार
का निर्माण और
विकास होना
चाहिए। इसलिये
लिखा है

“

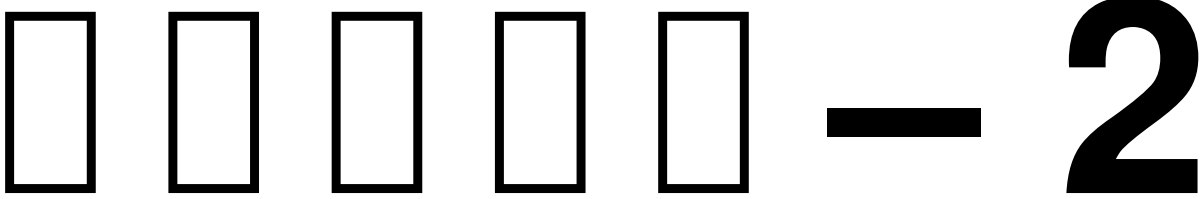
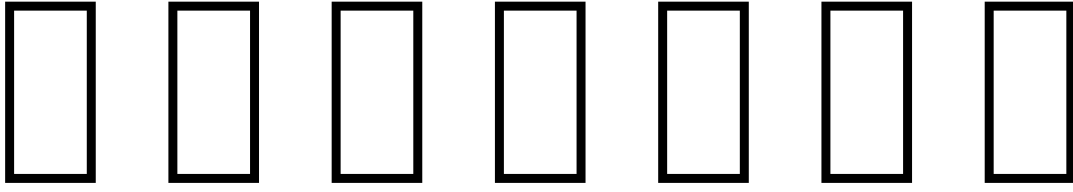
□ क दुसरे क भार
उठाओ और इस
प्रकार मसीह की
व्□ यवस्□ था के

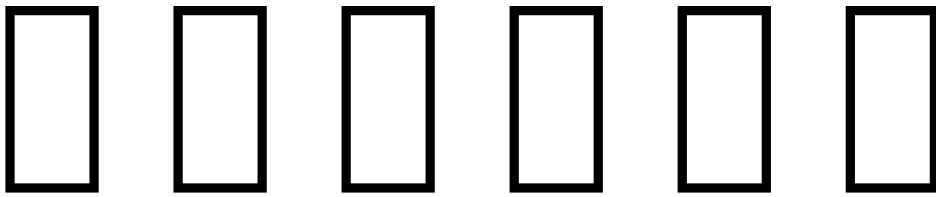
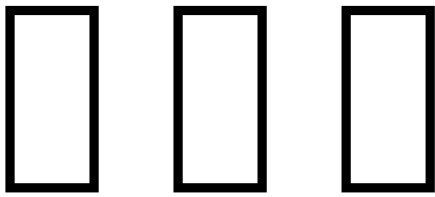
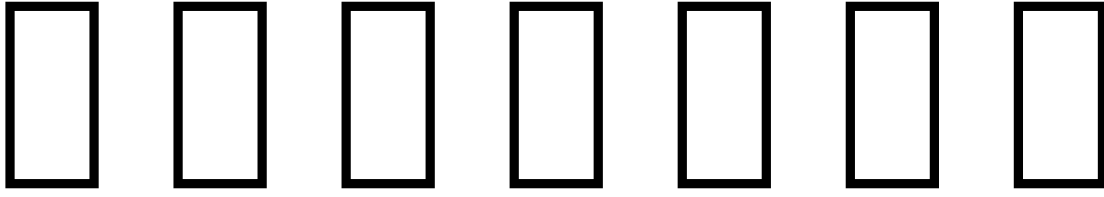
पूरण करो □

”

(गलतियों 6:2)

□ □ □ □ □ □ □





127:1

□ □ □ □ □ □ □ □ -

मसीही परिवार के
नरिमाण की बात
घर बनाने से
कन्ही ही मायनों

में समान है □

वा □ वाह के

अवसर पर

जब हम □ क

परिवार की
सुस्थापना की
बात करते हैं तो
हमको घर बनाने
से जुड़ी हुई इन

बातों की ओर
ध्यान देना है
जो कि कमसीही
परिवार के बनाने
के लिये भी

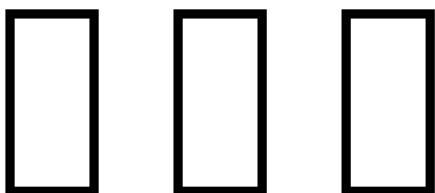
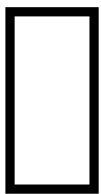
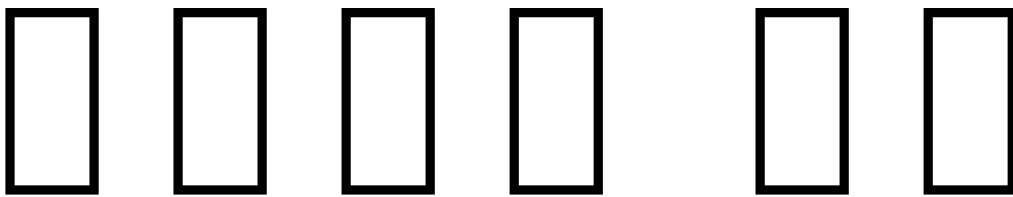
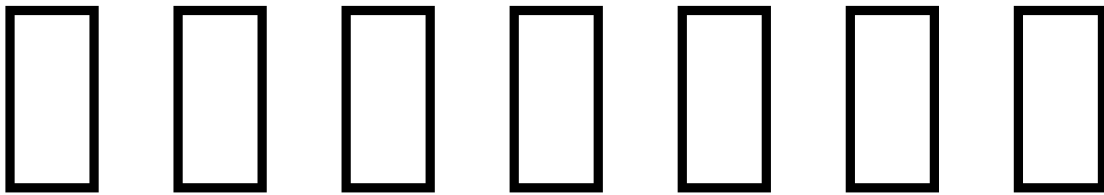
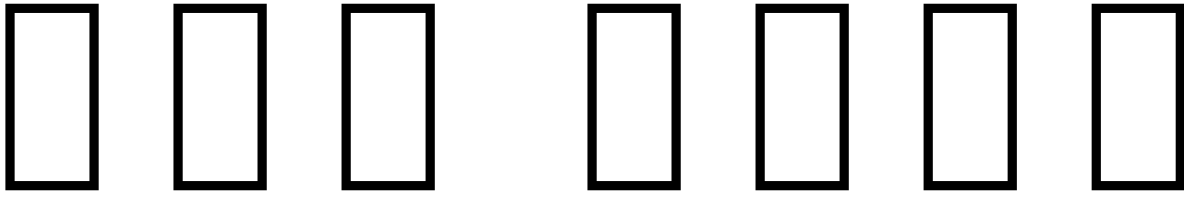
आवश्क यक है

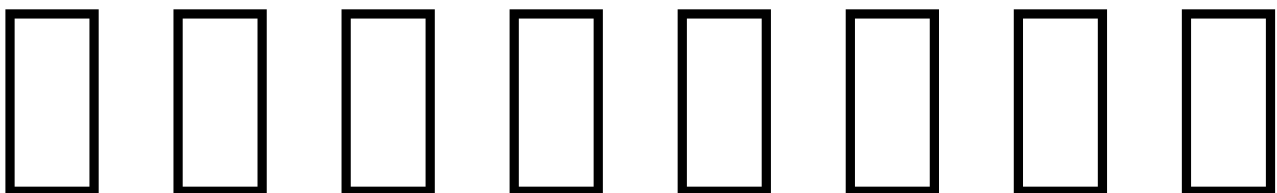
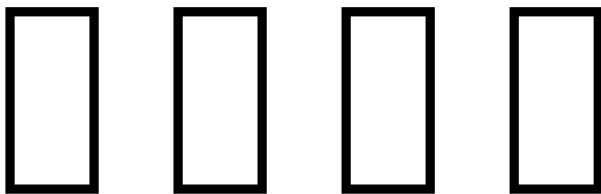
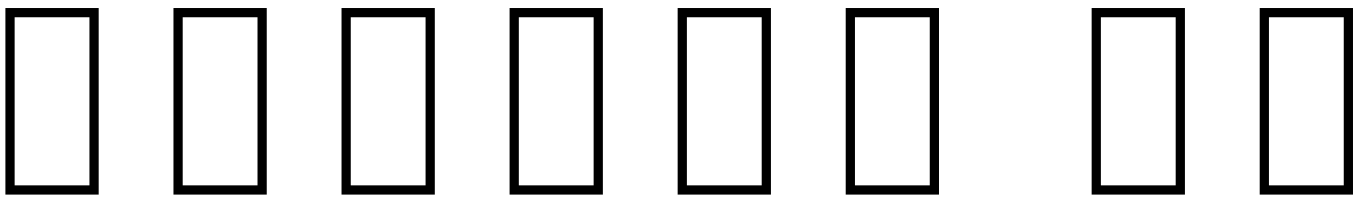
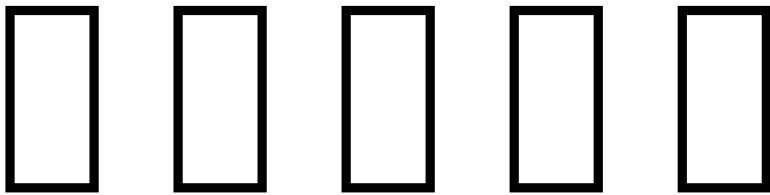
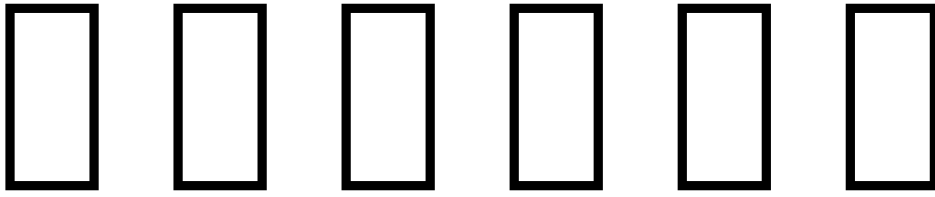
1. □ □ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □





□ □ □ □ -

परिवार में

परमेश्वर का

स्थान प्रथम

होना चाहिए।

परमेश्वर ने
जब मूसा को दस
आज्जा दीं तो
उसमें पहली
आज्जा थी,

“

तू मुझे छोड़

दूसरों को

ईश्वर करके न

मानना।

”

परिवार में
परमेश्वर को
प्रथम स्थान
देने का अर्थ है

प्रतदिनि सुबह

प्रार्थना के द्वारा

उसे पहला

स् थान देना

प्रत् येक

सप्ताह के

प्रथम दिन

कलीसिया के साथ

सहभागिता

करना प्रत्येक

माह अपनी
आमदनी क
पहला भाग
परमेश्वर के
देना। जब

परिवार के
प्रति एक आयाम
में परमेश्वर का
स्थान प्रथम
होगा तो उससे

यह प्रकट होगा
कि उस परिवार की
बुनयाद
परमेश्वर है
लिखा है,

“

यदि घर के
यहोवा ही न
बना, तो बनाने
वाले वर्य

परश्रम करते

हैं। जब तक

यहोवा ही नगर की

रक्षा न करें, तो

पहरेदार का

जागना व् यर्थ

है

”

(भजन संहिता
127:1)

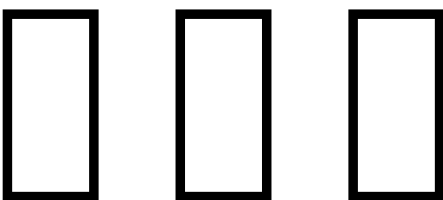
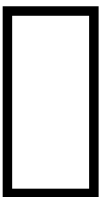
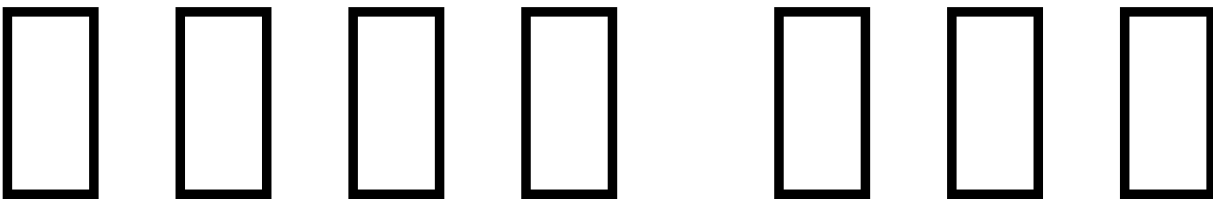
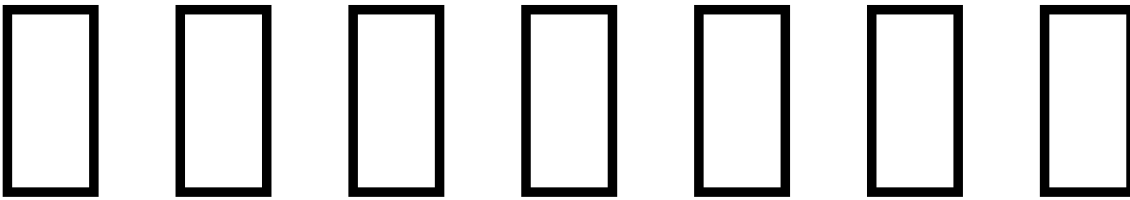
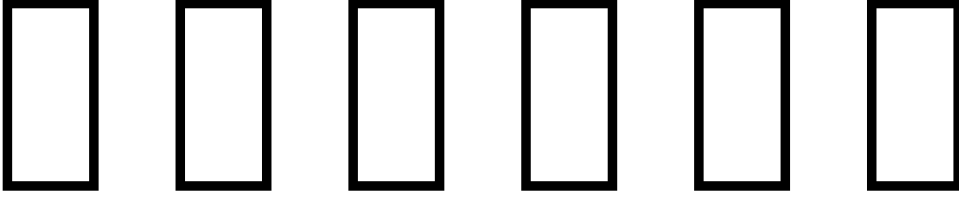
2. □ □ □ □

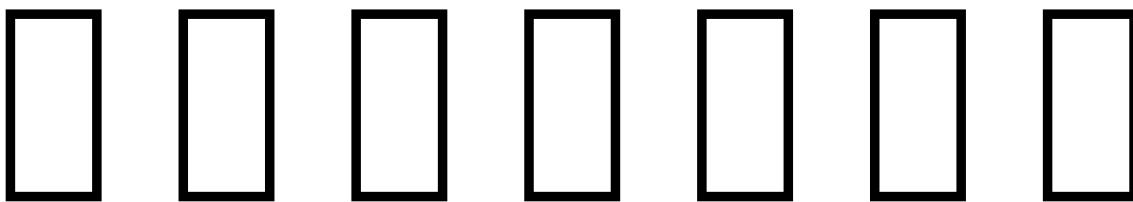
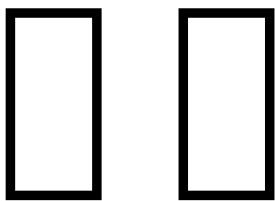
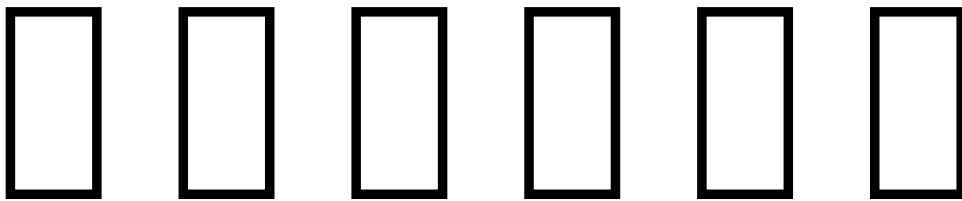
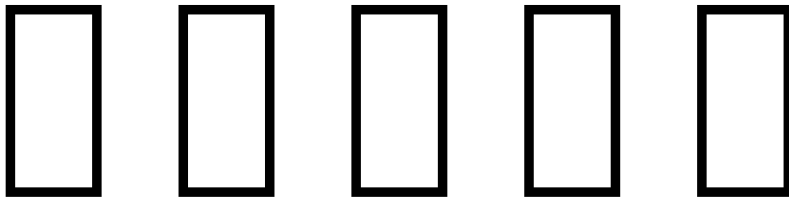
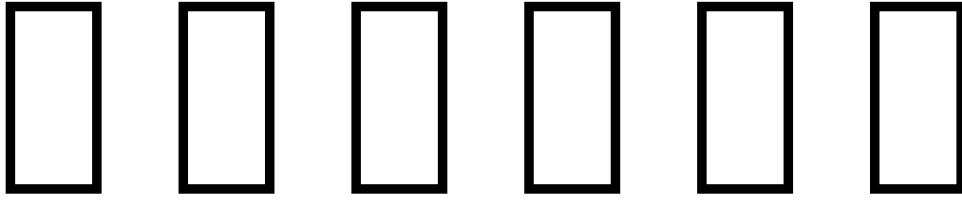
□ □ □ □ □ □ □

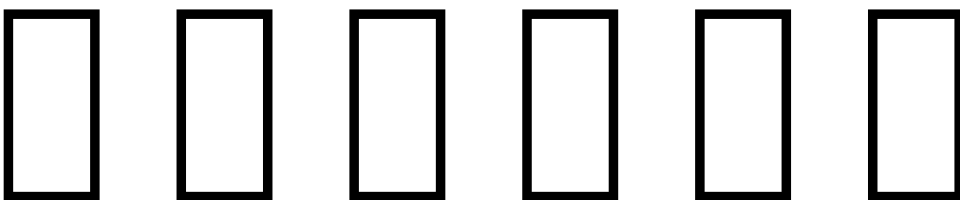
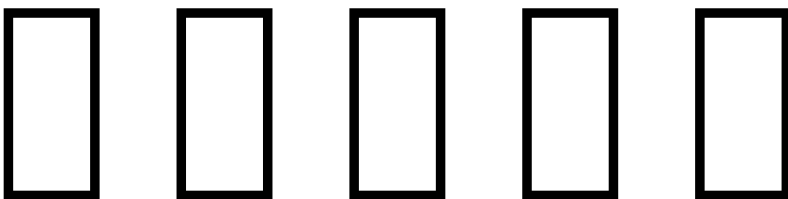
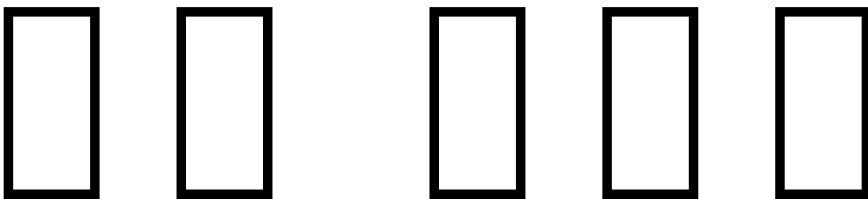
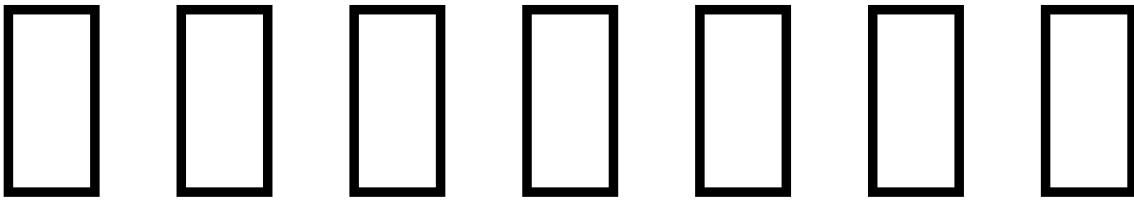
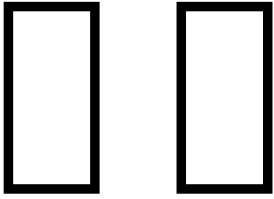
□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □







□ □ □ -

घर की बुनरियाद

रखने के बाद

दीवारें खड़ी होती

हैं □ दीवार चाहे

पत्थर की हो
या ईट की इनकी
मजबूती के लिए
सीमेंट जरूरी
होता है उसी

तरह मसीही

परिवार में संबंधों

की दीवारों की

मजबूती के लिए

प्रेम जरूरी होता

है 1 कुन्थियों

13:4-7 में

लिखा है

“

प्रेम

धीरजवन् त है,

और कृपाल है

▪
,

प्रेम डाह नहीं

करता

■

;

प्रेम अपनी

बढ़ाई नहीं करता,

और फूलता

नहीं। वह

अनरीता नहीं
चलता, वह
अपनी भलाई
नहीं चाहता,
संश्लेषण नहीं,

बुरा नहीं

मानता□ कुक्कुर

से आनन्दति

नहीं होता,

परन्तु सत्□ य

से आनन्दति
होता है। वह
सब बातों की
प्रतीति करता है,
सब बातों की

आशा रखता है,
सब बातों में
धीरज धरता है।
”

प्रेम ही

वृ यक्षा को
जोड़ता है, प्रेम
ही वृ यक्षा को
बढ़ाता है, उसे
सम्भालता है,

संवारता है,
टूटने से बचाता
है। प्रेम ही
व्यक्ति की
शक्ति होता है।

जसि प्रकार पानी
सीमेंट के
मज़बूती देता है
उसी प्रकार प्रेम
के साथ क्षमा

आवश्क़ है

क़ामा के बनिा

कोई भी संबंध्य

मज़बूत नहीं हो

सकता है

3. □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ , □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □

□ □ □ □ □ □ -

घर की छत

वृ यक्षा के

सुरक्षा देती है।

छत उसे धूप,

बारिश, आंधी,

तूफान से बचाती

है।

वृ यवस् थावा

वरण 6:6-8 में

लिखा है

“

और ये

आज्जां जो मैं

आज तुझ के

सुनाता हूं वे तेरे

मन में बनी रहें

■
;

और तू इन्हीं हैं
अपने
बालबच्चे चों के
समझाकर
संख्याया करना,

और घर में बैठे,
मार्ग पर चलते,
लेटते, उठते,
इनकी चर्चा
किया करना और

इन्द्र हैं आपने

हाथ पर

चन्दि हानी करके

बांधना, और ये

तेरी आंखों के

बीच टीके का काम

दें

”

शैतान

कठिनाईयों,
दुःख, पीड़ा,
वधियोह,
परीक्षाओं और

आलोचना के
द्वारा परिवार
पर आक्रमण
करेगा परन्तु तु

वचन हमारे

वरिधी शैतान

से हमके

बचाँ गाँ इस

करण परिवार में

प्रतदिनि वचन

क पठन हो।

नीतविचन

13:13 में
लिखा है

“

जो वचन को
तुच्छ छ जानता,
वह नाश हो
जाता है,

परन्तु

आज्जा के

डरवैय्ये के

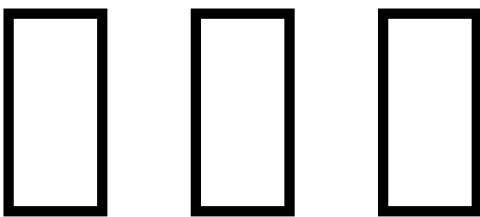
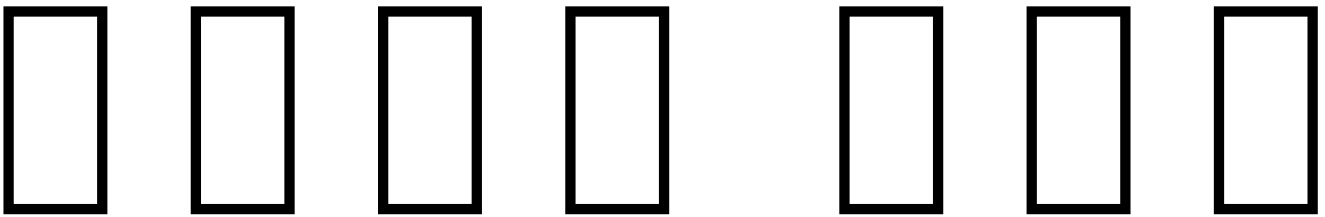
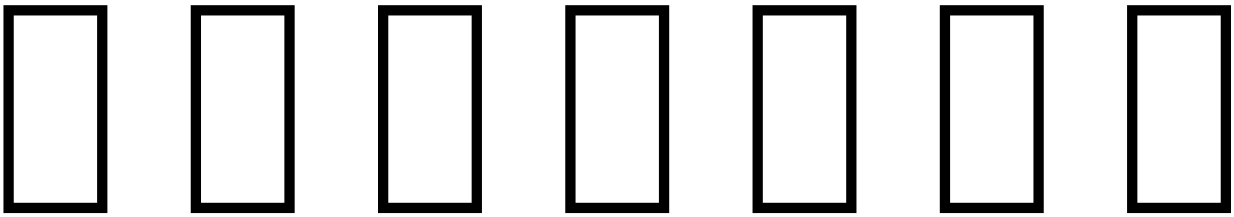
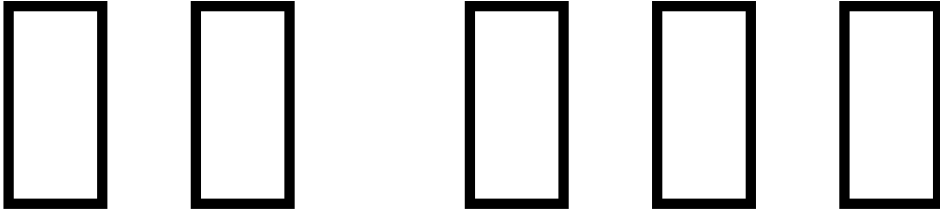
अच्छा फल

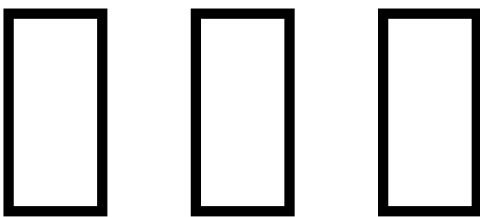
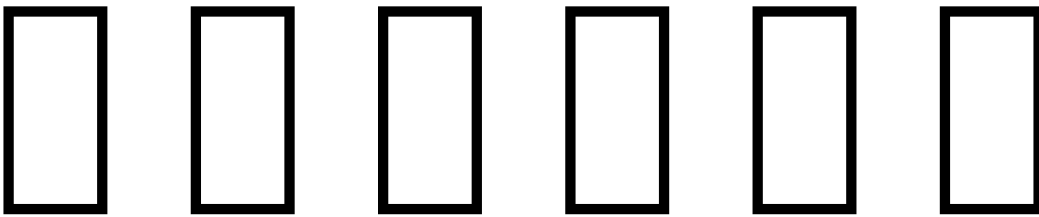
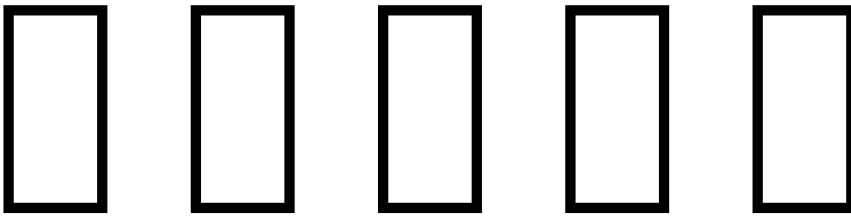
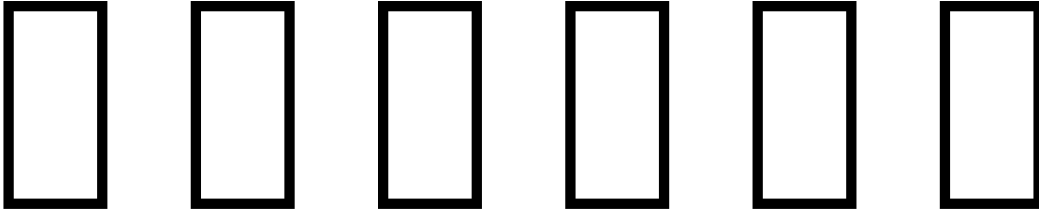
मलिता है□

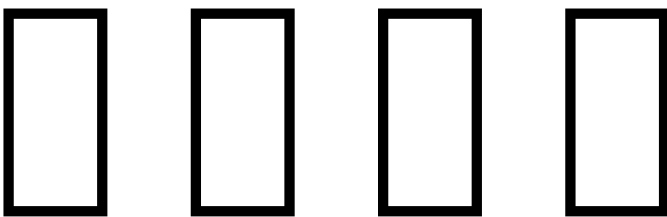
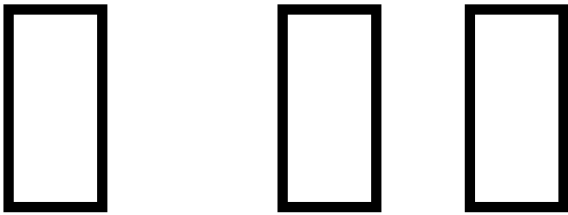
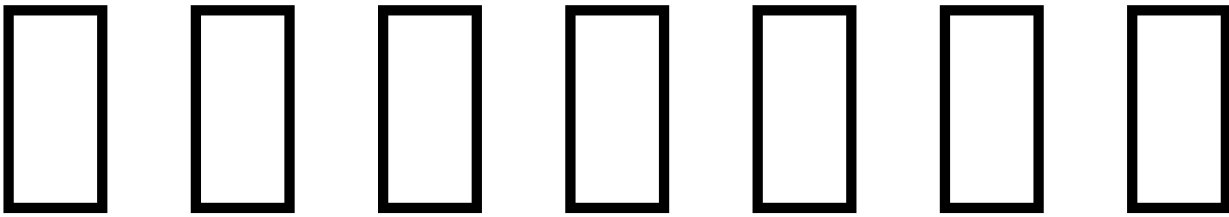
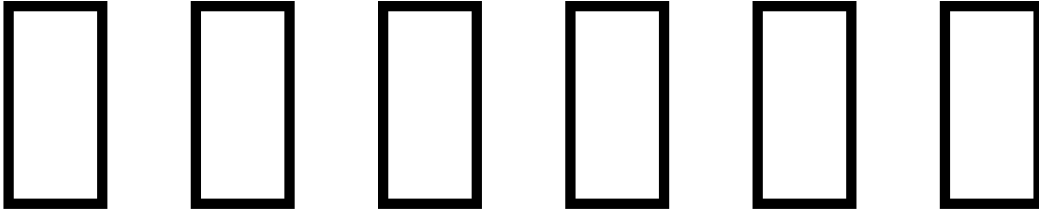
”

4. □ □ □ □

□ □ □ □ □ □ □







□ □ □ □

□ □ □ : -

दरवाज़े कमरों

की, घर की सीमा

पर होते हैं। जो
घर की सीमाओं
के रूप में कार्य
में करते हैं, उसी

प्रकार मसीही

परिवार के लार्

भी परमेश्वर

ने कुछ सीमां

बनाई है

नीतिविचन

12:4 में

पत्नी के लिए

लिखा है “भल

ी स्त्री तरी अपने

पता क मुकुट

है, परन्तु जो

लज्जा के

काम करती वह

मानो उसकी

हड्डियों के

सड़ने का कारण

होती है।

”

नीतिविचन

6:27-29 में

पता के लिए

लिखा है

“

की या हो सकता

है क कोई

आपनी छाती

पर आग रख

ले

■

;

और उसके

कपड़े न जलें?

की या हो सकता

है कि कोई

अंगारे पर चले,

और उसके पांव

न झुलसैं? जो

पराई स्त्री के
पास जाता है,
उसकी दशा
ऐसी है

■

;

वरन् जो कोई

उसके छुँ गा

वह दण्ड से

ने बचेगा।

”

इस कारण

मसीही पर विचार

की मज़बूती के

लिए

आवश्यक है

की पता पत्नी

वं परिवार क

प्रत् येक

सदस् य इन

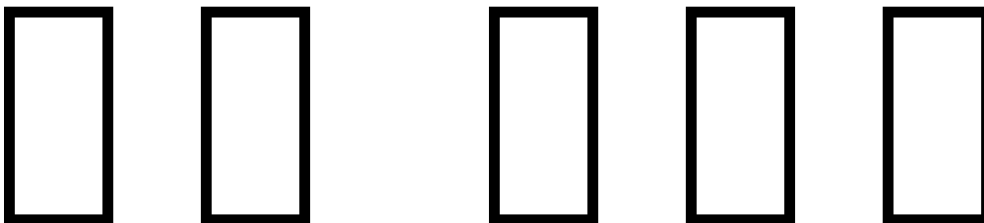
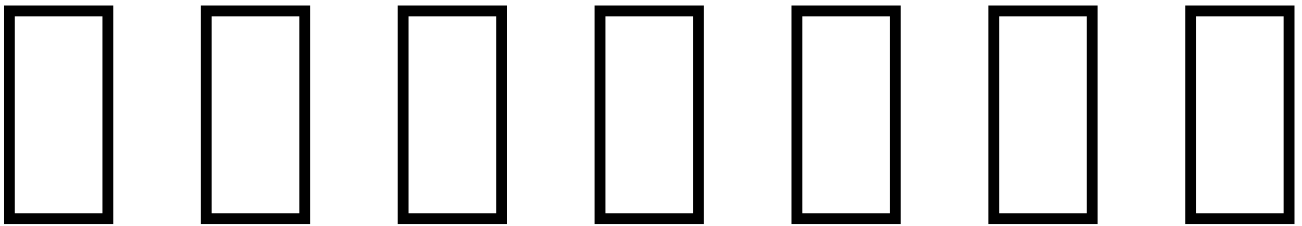
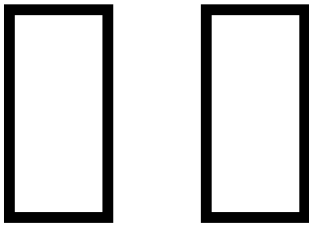
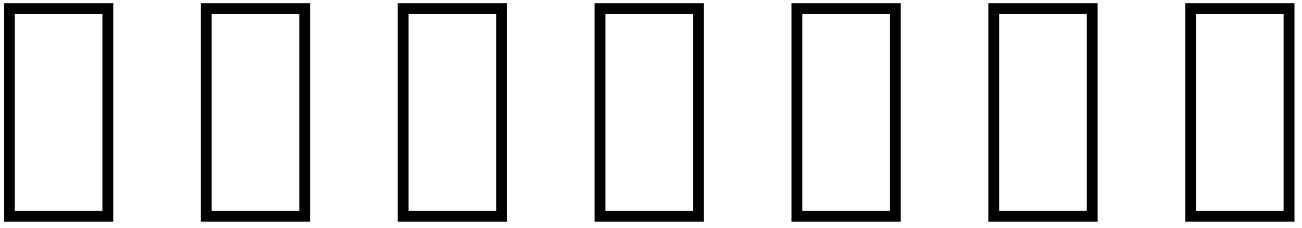
सीमाओं के

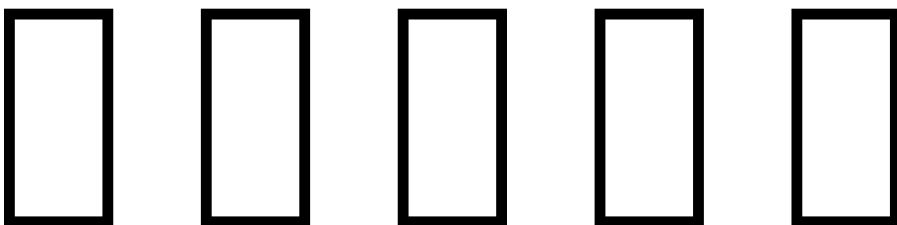
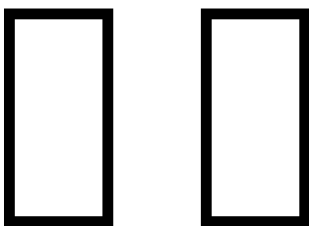
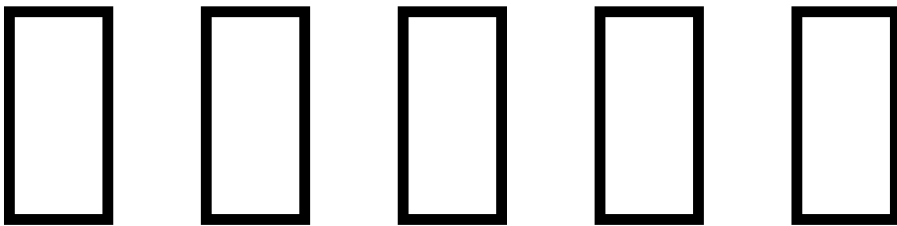
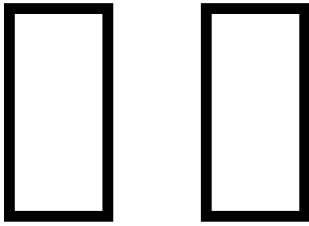
भीतर रहकर

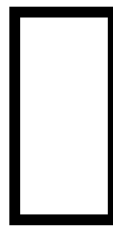
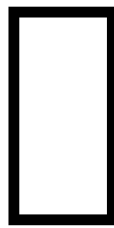
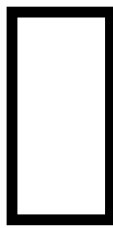
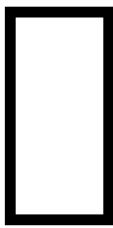
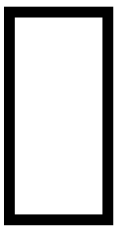
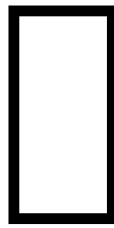
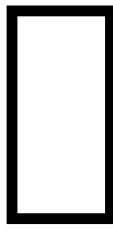
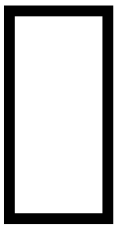
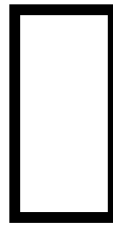
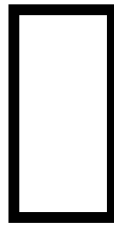
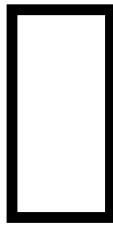
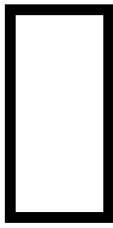
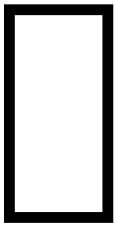
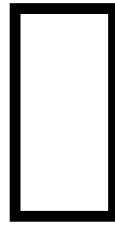
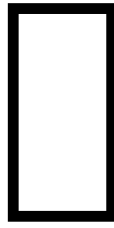
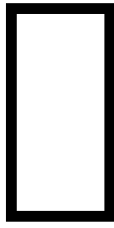
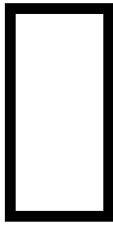
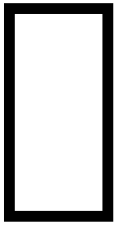
जीवन में आगे

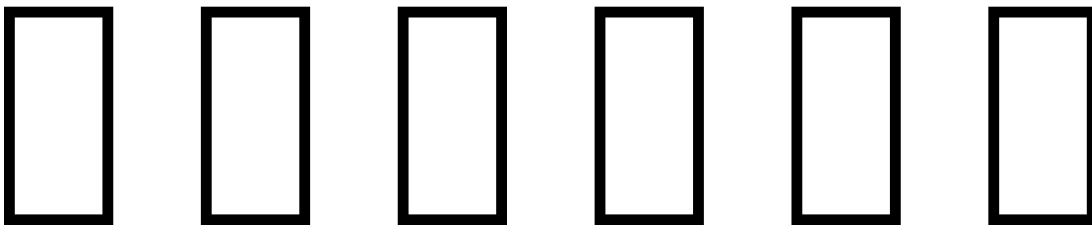
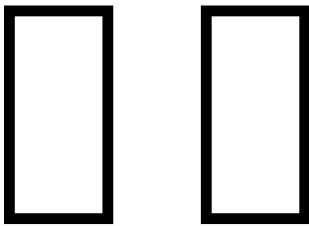
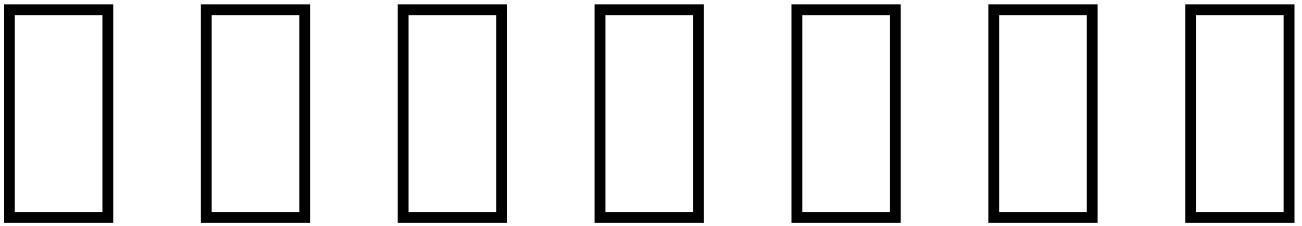
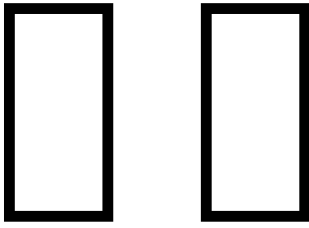
बढ़ें।

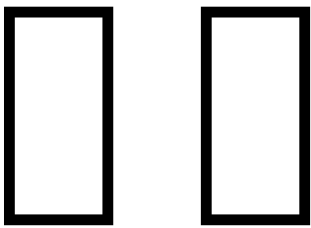
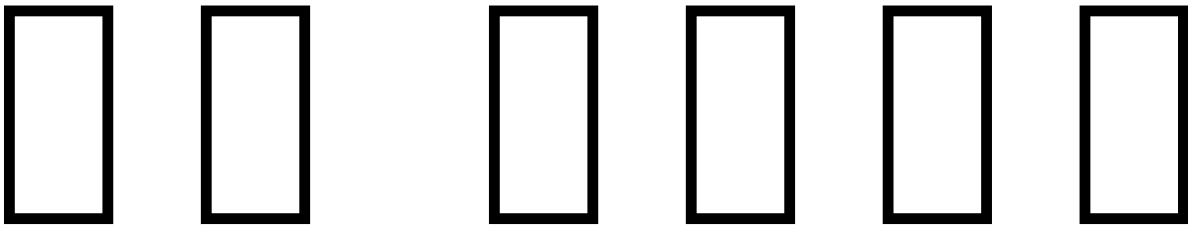
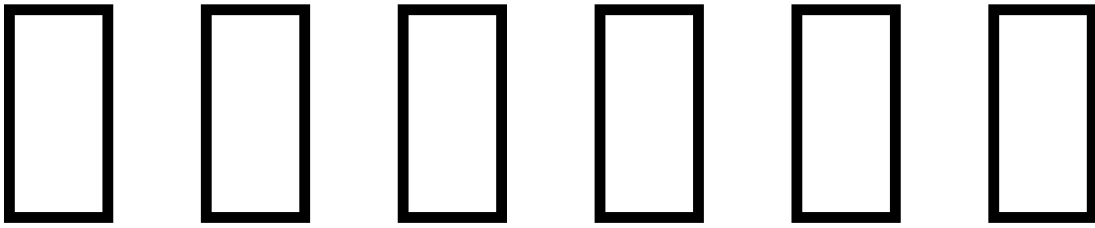
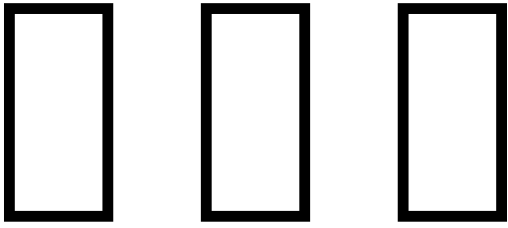
5. □ □ □ □











□ □ □ □ □ □ □

□ □ □ □ □ □

□ □ □ -

□ क सुन् □ दर

मसीही परविवार
में आत्मा के
फलों का पाया
जाना ज़रूरी

है□ ये

आत्□ मा के

फल है

■

;

“

आत्मा मा क

फल प्रेम,

आनन्द,

मेल, धीरज,

कृपा, भलाई,

वशिष्ट वास,

नम्रता, और

संयम है

■
;

ऐसे ऐसे कामों

के वरिध में

कोई भी

व्यक्ति यवस्व था

नहीं और जो

मसीह यीशु के

है, उन्हें होने
शरीर के उस
की लालसाओं
और

अभिलाषाओं
समेत कुरस पर
चढ़ा दिया है।
”

(गलतरियों
5:22-24)

मसीही परवार
में प्रत्तु येक

समय

अच्छी छी

बातों,

अच्छे छे

वचिारों,
अच्छे
कर्यो की ओर
ध्यान होना

चाहती ।

की योंक पेड़

आपने फलों के

द्वारा पहचाना

जाता है□

फलापि□ पर्यो

4:8 में लिखा

ॐ

“

नादान, हे
भाइयो, जो जो
बातें सत् य हैं

■

;

और जो जो

बातें आदरणीय

रों

■

;

और जो जो

बातें पवतिर

हैं, और जो

जो बातें

सुहावनी हैं,

और जो जो

बातें उच्यति हैं,

और जो जो
बातें मनभावनी
हैं, नदिान, जो
जो सदगुण

और प्रशंसा
की बातें हैं
उन्हीं पर
ध्यान

लगाया करो

”

□ □ □ □ □ □

□ □ □ □ ■ ज

ब आज वर

और वधु

वविवाह के इस

बंधन में बांधे

ग। है। इनके

द्वारा । क

मसीही परविवार
की स्थापना
आज हुई है।
अतः ये पाचों

बातें इनके

परिवार में पाई

जां ताक इस

सुन दर

मसीही परविवार

के देखकर

लोग

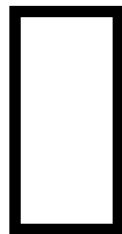
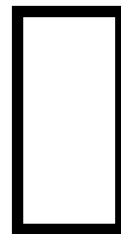
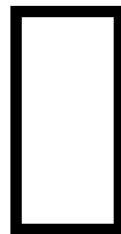
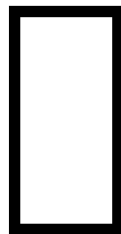
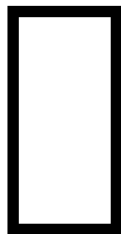
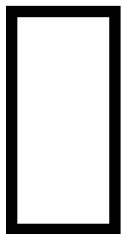
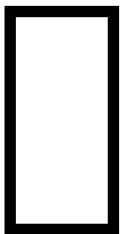
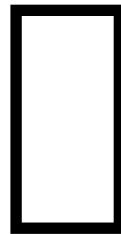
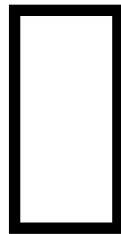
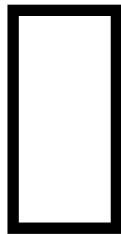
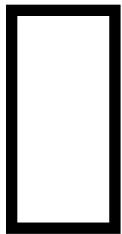
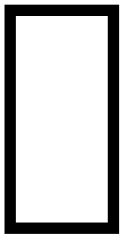
परमेश्वर की

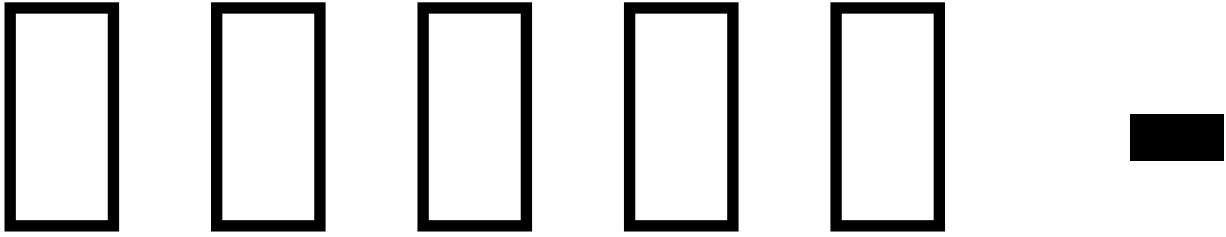
आशीषों □ वं

उपस्थिति क

अनुभव कर

सर्वे □





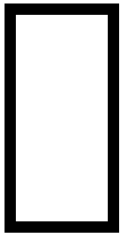
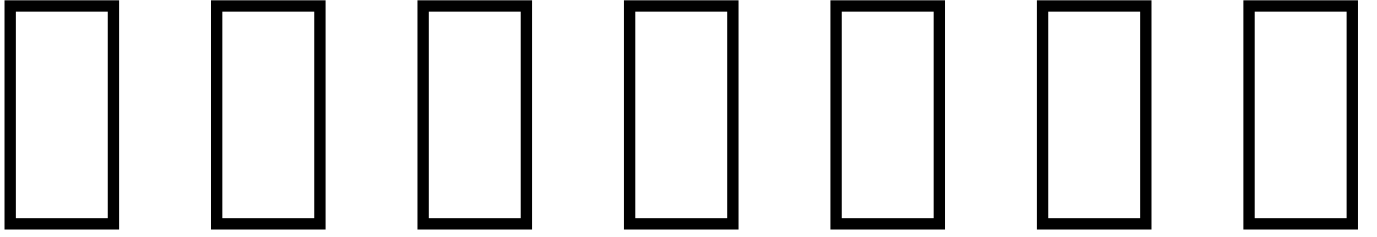
3

□ □ □ □ □ □ □

□ : □ □ □

□ □ □ □ □ □

127:1-5;



5:22-25

□ □ □ □ □ □

□ - परमेश्□

वर ने

आरंम्□ भ मे

सृष्टि की

सृजना की

और उसके

बाद आदम व

हव्□ वा क

नर्माण

किया□

आदम-हव्□

वा ने अदन
की वाटकि में
परमेश्वर
की आज्ञा

तोड़ी और

वर्जति फल

खाया।

परमेश्वर वर

उन पर

क्रोधति हुआ

और उनमें

अदन की

वाटकि से

नकिल दया

गया

परन्तु

परमेश्वर ने

आदम और

हव्वे वा

द्वारा अपनी

आज्जा के
तोड़े जाने के
बावजूद
उन्हें सज़ा

देने के बाद भी

आशीषति

किया और उन

दोनों के द्वारा

संसार की
सबसे प्रमुख
और
प्राथमिक

इकाई के रूप में

“

परिवार

”

कर जन्म म

है आ

परिवार सुपुर्ता

के प्रारंभ से

ही

परमेश्वर

की आशीषों

के प्राप्ति त

करता रहा

है परविवार

समाज की क

बहुत ही

महत्त्वपूर्ण

इकाई है

बाईबलि में

हम

पति-पत्नी

तथा परिवार

के संबंध में

बहुत सी

बातों का

वर्णन पाते

है पत्नी वं

पत्नी के

परिवार क

संचालन करने

के लार्पि बहुत

से नरिदेश

दरिये गये हैरि

संतानों के भी

बहुत सी
आज्जां दी
गर्ह है
बाईबलि में

बहुत से ऐसे

आशीषति

परिवारों क

वर्णन पाया

जाता है,
जन्म होने
परमेश्वर
की आगुवाई

□ वं

सहभागिता में

चलते हैं □

अनेक

आदर्श

स्व थापति

किये □ वं

जानिक

अनुकरण
करना आज
भी आशीषों
क स्तु त्रोत

माना जाता

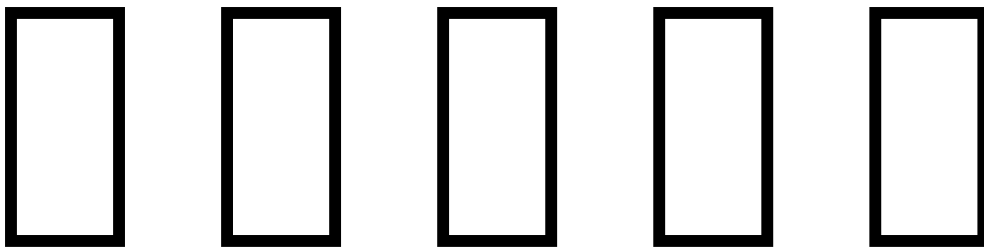
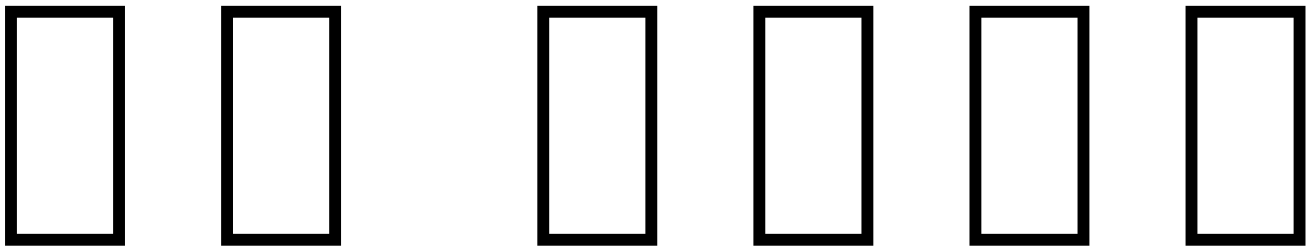
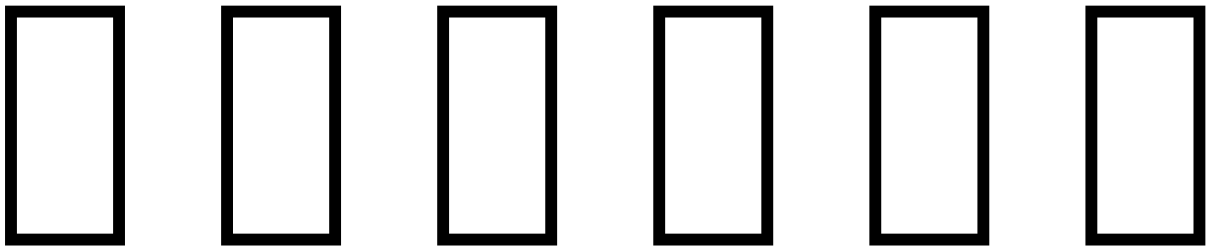
है। इस

संबंध में कुछ

बातों के हम

देखें

1.



□ □ □ □

□ □ □ - भजन

संहिता 127

के पहले तथा

दूसरे पद में
लिखा है

■

;

“

यदि घर के

यहोवा न

बना तो

बनाने वाले

वर्णार्थ

परशिरम करते

हैं जब तक

यहोवा ही

नगर की रक्षा

न करे तो

पहरेदार क

जागना

वर्णार्थ है

तुम्हारा

तड़के उठना,

देर से

वशिराम करना
और परशिराम
की रोटी खाना
तुम्हारे

ला

वर् यर्थ है

क् योंक, वह

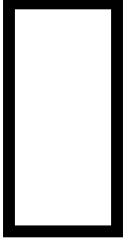
आपने प्ररिओं

को यूं ही नींद

प्रदान करता

आ

”



डॉ. अजय लाल

बलि ग्राहम

ने आपनी

पुस्तक तक में

लिखा है ;

‘

मानसिक रोगों
से ग्रसति

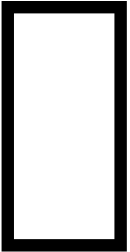
80% लोगों

की बीमारी क

मूल कारण

अकेलापन है

”



यदा परविवार

के

परमेश्वर वर

की आशीषों

का कारण

ठहराना है

तो आपने
परिवार में
परमेश्वर वर

के अपना

केन्द्र

बनाना है

आपने
पाठ रविवारकि
जीवन क

आधार परमेश्वर के बनाना

है। जब
परिवार के
सम्मुख

कठिनाइयां,

संघर्ष आं

तो उनके

समाधान कके

ली

परमेश्वर वर

की ओर

देखना है।

समस् याओं

क हल

परमेश्वर

से हासलि

करना है

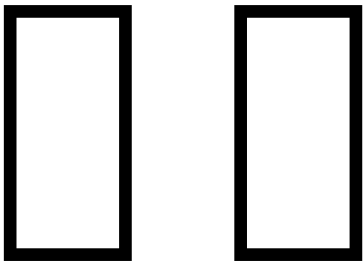
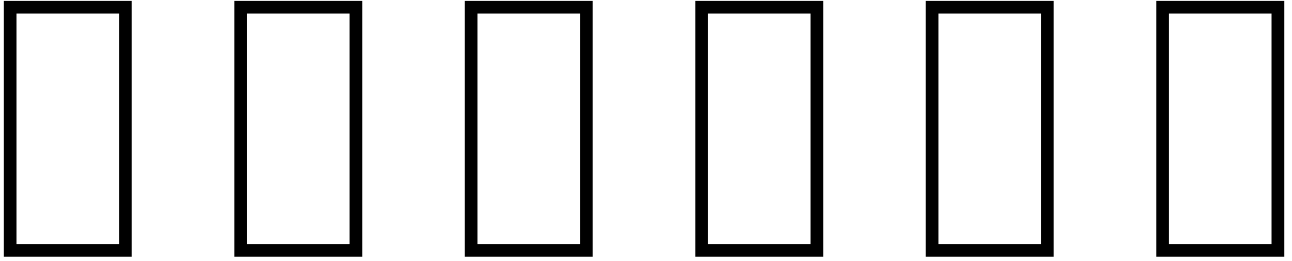
की योंक

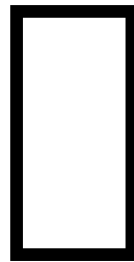
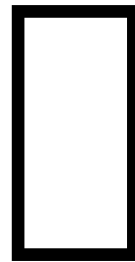
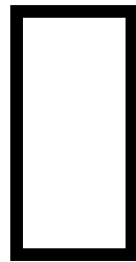
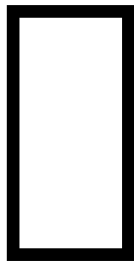
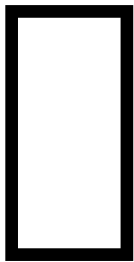
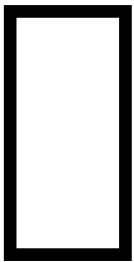
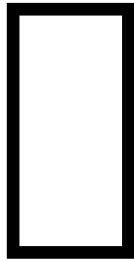
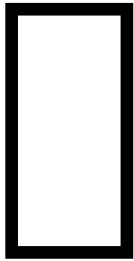
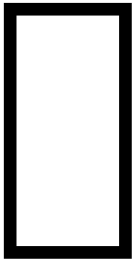
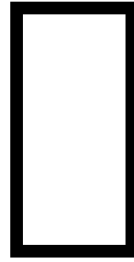
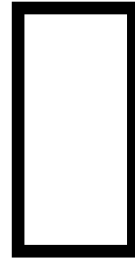
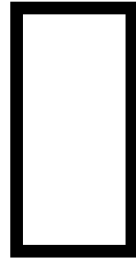
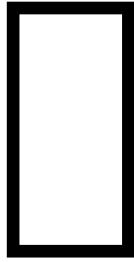
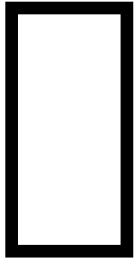
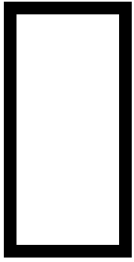
उसी ने

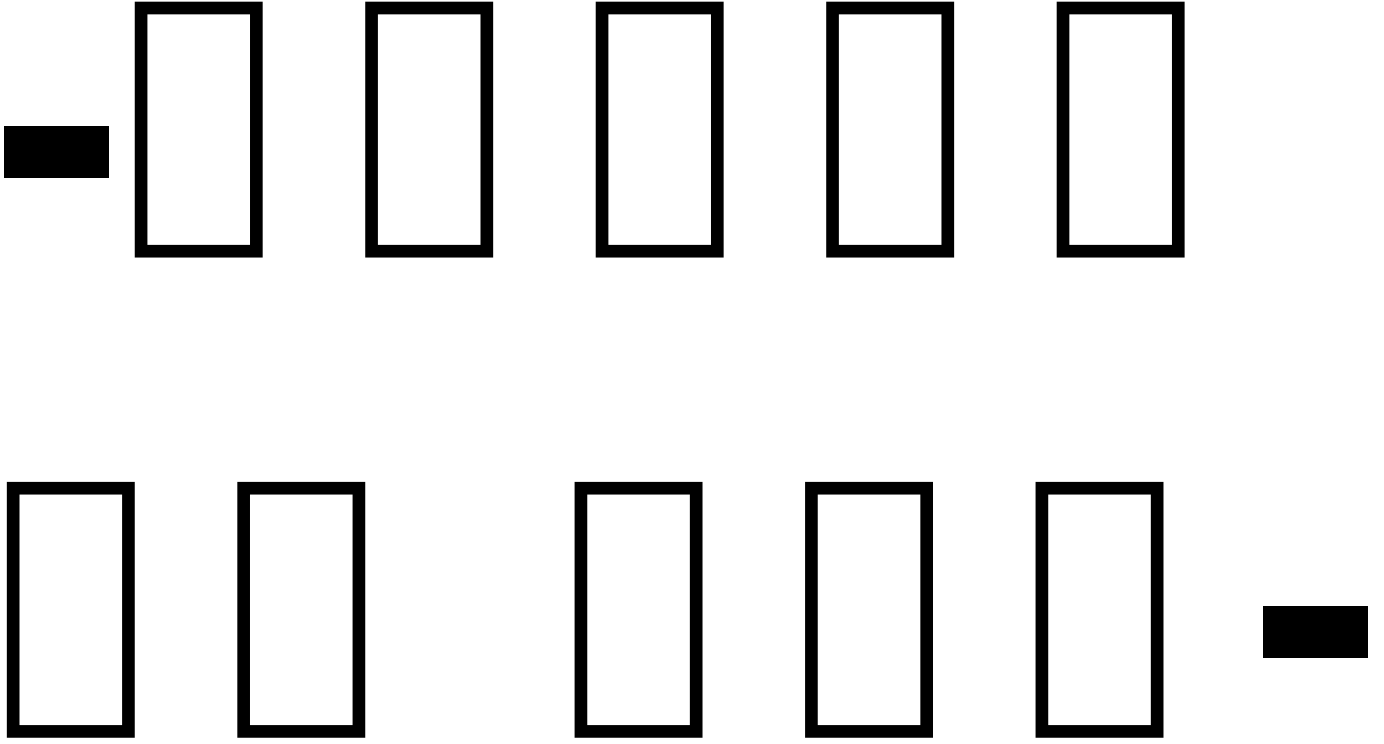
परिवार

बनाया है।

2.







वविवाह क

उद्देश्य

होता है वंश

के बढ़ाना

परन्तु

वैवाहिक

बाद

स् थापति

परिवार क

उद्देश्य

बच्चा चोँ क

चरतिर

नरिमाण होना

चाहती ।

भजन संहिता

127 के

तीसरे व
चौथे पद में
लिखा है ;

“

देखो,

बच्चे

यहोवा के

द्वारा

दान है,

गर्भ क फल

उसकी ओर

से प्रतपिन्

है, जैसे वीर

के हाथ में

तीर, वैसे ही

जवानी की
संतान होती
है।

”

परिवार में

संतानें,

परमेश्वर

के दरिये ह्ये

भाग है

इब्रानी
भाषा में
“

भाग

”

शब्द द के

लाल

इसमें तेमाल

किये गये

शब्द द क

अर्थ

“

धरोहर

”

होता है

अर्थात्
वचने
परमेश्वर

की धरोहर

हैं

परमेश्वर

कहता है कि

ये बच्चा के

मेरी धरोहर

हैं और तुम

इनके

भण्डारी

हो, तुम्हें

□ कदनि

इनके लार्

लेखा देना

पड़ेगा □

अत □

माता-पति

इस प्रकार

इस इनके

वक्रस्पति करें

किये सही

दर्शा जाँ, ,

सही नशियाने

पर बैठें

और इनके

जीवन

परमेश्वर

की योजना

के पूरा करने

वाले हों।

किसी ने कहा

कौ

“

इससे पहले

कहम

आपने

बच्चे चों के

डॉ. कृ. टर,

इंजीनियर,

प्रोफेसर

बनायें, हमें

उन्में

सच्य् च्या

और

अच्छा छा

मसीही

बनाना है□

”

□ कमसीही

परिवार क

आधार.

उसक

केम् दूर

प्रभु यीशु

मसीह होना

चाहती और

पर विचार क

उद्देश्य य

चरतिर

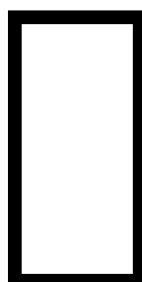
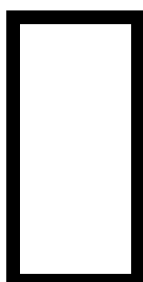
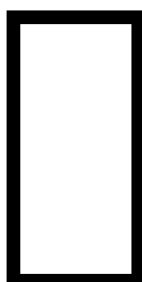
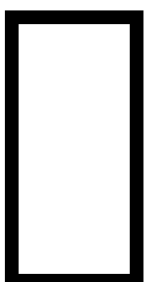
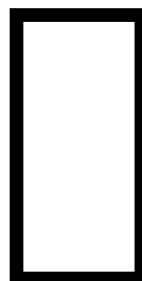
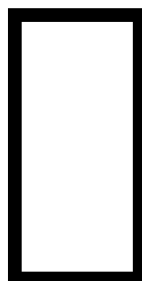
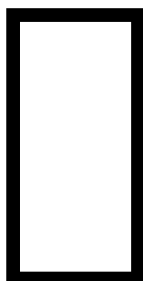
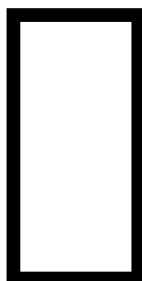
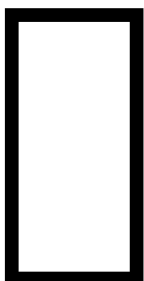
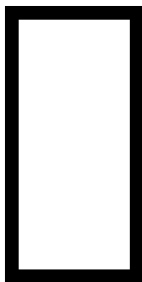
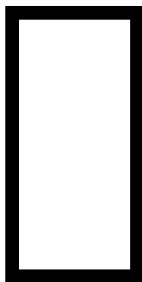
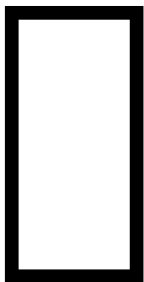
नरिमाण

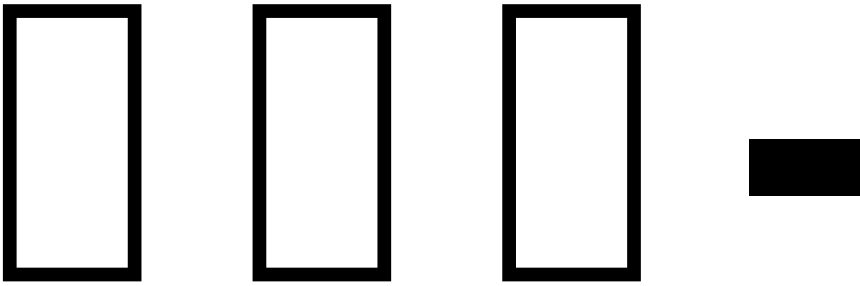
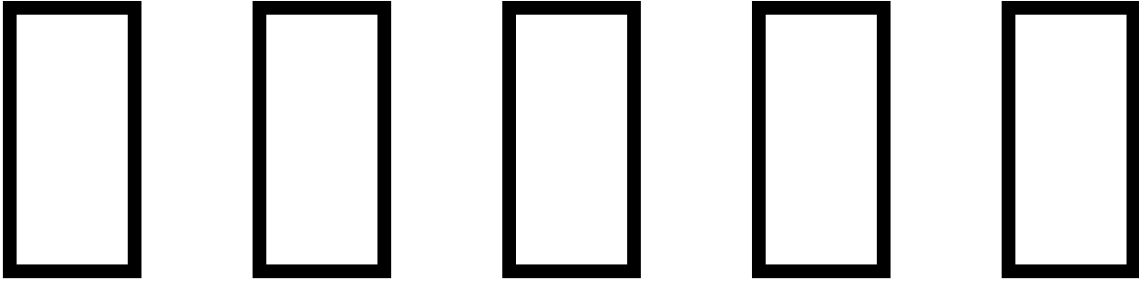
होना

चाहिए।

3.

□ □ □ □ □





परमेश्वर वर

ने परिवार के

पति-पत्नी न

ही दोनों ही

के

भानि न-भा

न न

भूमिका।
सौंपी है,
उनके

अलग-अल

ग

उत्तरदायी

तु व है

■
,

परिवार में

उनके

अलग-अल

ग स्पृथान

हैं, स्थिति

हैं □ जैसे

इफसियों की

पत्रों में
लिखा है

■
,

“

हे पत्नियों,

आपने आपने

पता के

अधीन रहो

जैसे कि

प्रभु की

प्रभु के

अधीन हो।

क्या योंक

पता तो

पत्ना क

सरि है,

जासि प्रकार

मस्सीह भी

कली सारिया क

सरि है और

स् वयं देह

क

उद्धारकर्त्ता

ता है पर

जैसे

कली सपिया

मसीह के

अधीन है
वैसे ही
पत्नियों भी

हर बात में
आपने-आपने
पता के

अधीन
रहेंगे
पत्तियों,

आपनी

आपनी

पत्नी से

प्रेम करो

जैसा मसीह

ने भी

कलीसयिया से

प्रेम किया

और आपने

आपके
उसके ली
दे दिया

”

(इफसियों

5:22-2

5)

वचन

स् पष् ट

बताता है

की पत्नी

पत्नी सारि

है, परविवार

क प्रमुख

है □

पत्नी के

परमेश्वर

ने पता के

अधीन

बनाया

परन्तु

इसका यह

अर्थ नहीं

की गलत

बात और

ग़लत कार्य

में पत्नी

पता के

सहयोग

दे।

परन्तु तु

परिवार में

यदि पति

अवशिष्ट वा
सी हो तो
पत्नी

आपने
वर्षों वास
में बनी रहे

और आपने
वर्षों वास
और प्रेम

से पता के

जीतने क

प्रयत्न न

करो पता

के लार्

नरिदेश

क आपनी

देह के

समान

आपनी

पत्नी से

प्रेम रखें

परिवार के

अच्छी

तरह से

चलाने की

प्रमुख

कुंजी,

मुख्य य

शब्द द

“

प्रेम

”

आप

क्या योंक

■
,

प्रेम हरेक

बात सह

लेता है,

प्रेम में

सहनशीलता

एक गुण

होता है।

जब परवितार

में

पत-पतर्ना

के बीच

प्रेम होता

है तो वे

□ क दूसरे

के

प्रोत्□ साहा

त करने में

आगे बढ़ते

और,

प्रत् येक

समस् या

ओं,

कठिनाइयों,

अच्छे

पलों में

सम्पूर्ण पुरण

हरदय से

सहभागी

होते हैं और

प्रेम के

कारण ही

उनमें □ क

दूसरे के

प्रति

वशिष्ट वास

योग्य य बने

रहने की

भावना

उपजती

आरे

यदि

परिवार के

सुचारु रूप

से चलाना

है तो उसकी

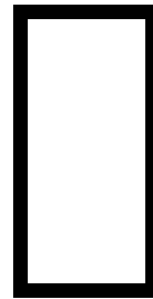
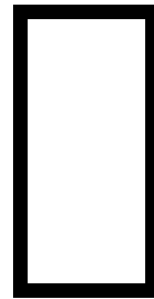
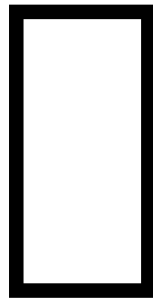
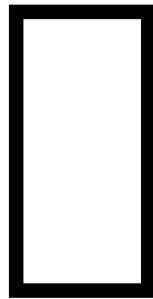
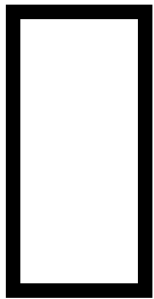
कार्यवाही

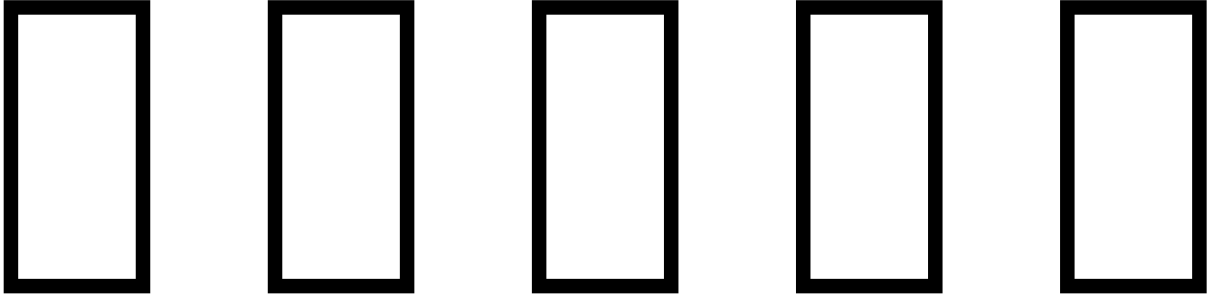
“

प्रेम

”

हो





■ परविवार

परमेश्वर व

र की दृष्टि

में बहुत

महत्त्वपूर्ण

ण इकाई

ॐ ■ ■ ■ ■ ■ ■ ■

■ परविवार

वह

संस्पृथा है

जैसे

परमेश्वर व

रने

स्वयं

स् थापति

करिया है

- वरु

कार्यशाला

है, जहां

चरित्र क

नरिमाण

होता।

■ वह

द्वार है

जहां कुछ

ताले खुलते

हैं, कुछ

बंद हो

जाते हैं।

। वह

शरण

सुथान

जहां तूफानों
में सहारा
मलित्त है।

- वरुण

रास्पा ता भा

जो

सर्व वर्ग में

जाकर

समाहति हो

जाता है।

इसी कारण

यदि हम
चाहते हैं
कि हमारा

परिवार

परमेश्वर व

र की

आशीषों के

प्राप्त त

करे तो

■

;

- हमारे

परिवार का

आधार

परम यीशु

होना

चाहिए।

- हमारे

पर विचार क

उद्देश्य

चरित्र

नरिमाण

होना

चाहिए।

- हमारे

परिवार की

कार्यवाही

“

प्रेम

”

होनी

चाहिए।

□ □ □ □ □

□ □ ■

जब

वर-वधु

वविवाह के

अभालिखों

पर

हस्र ताक्ष

र करते हैं

तब हम

सब गीत

क्रमांक

गा० गे०

(यदा

सूचना।

हो तो इस

आवसर पर

प्रसारित

की जा०

वर वधु

दोनों पक्षों

से 2-2

गवाह

अभिलेखों

पर

हस्र ताक्ष

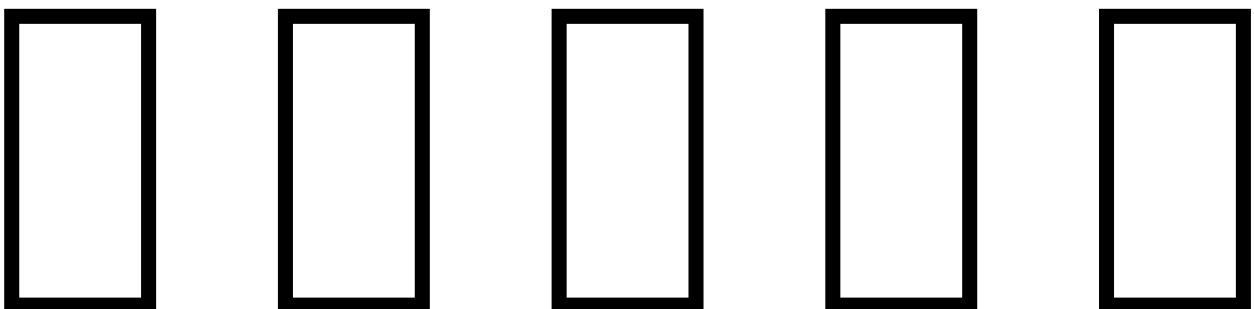
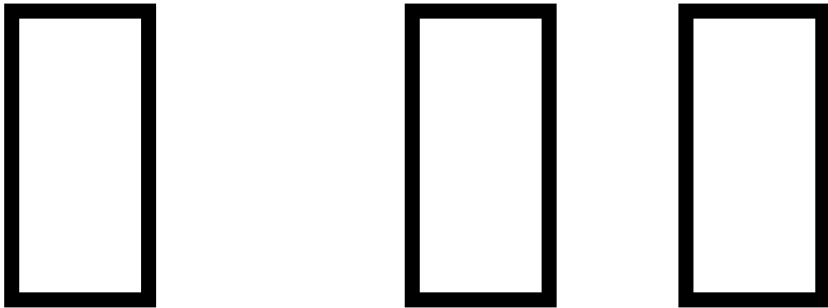
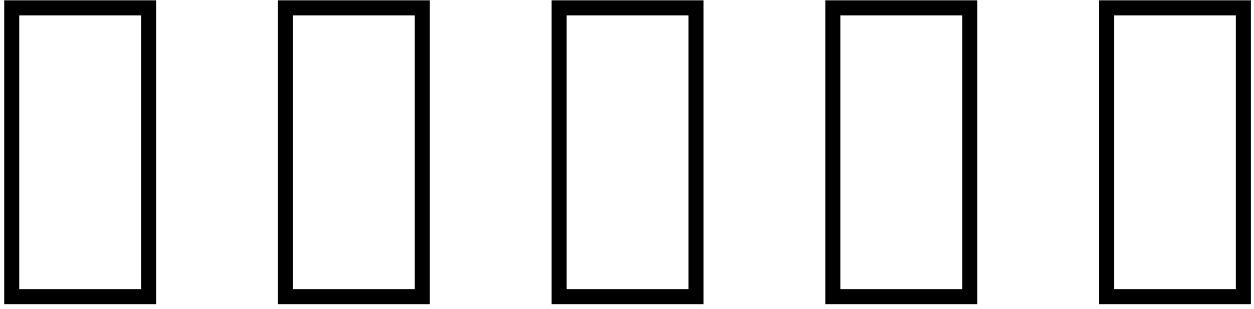
र के लार्

आ

जा०.०)

□□□□ -

□□□□



1.

होगी

आशीषों

की वर्षा

प्रेम की

प्रतिज्ञा

के मान

होगा समय

जीवन

दायक

खरीप ट

मुक्तदिता

क दान

□ □ : □

वर्षा

आशीष की

वरुणा

आशीषों
की भेज
दया की

बंदो

टपकरी

वरुषा

आशीषों की भेजा 2. होगी

आशीषों
की वर्षा
तब नया

जीवन

प्रबल

सबों में

उत्पन्न

न करेगा

आत्मा

पवतिर क

फल

3. होगी

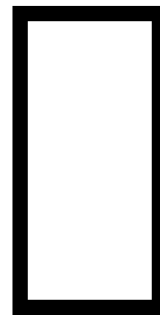
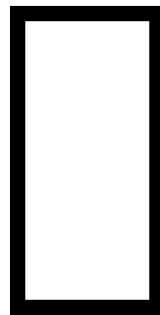
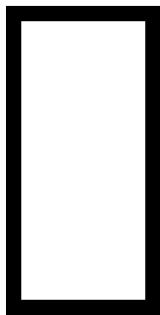
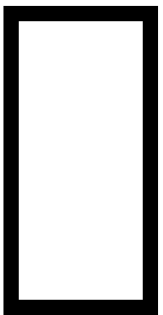
आशीषों
की वर्षा
आज से

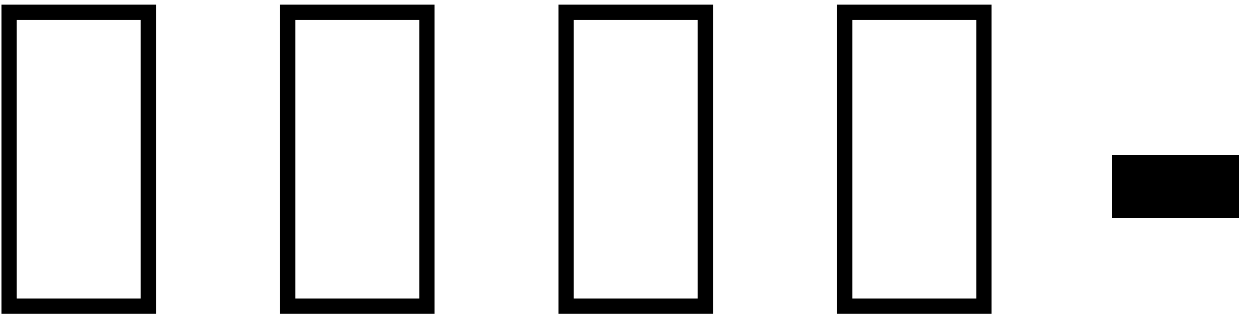
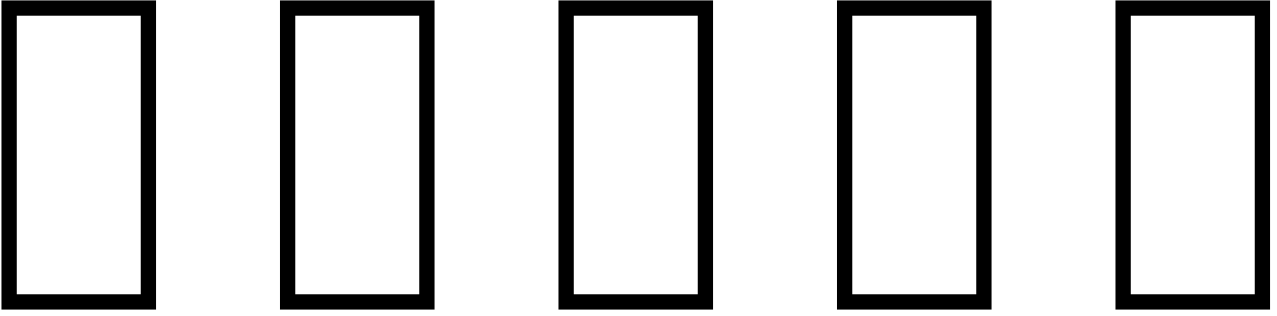
आरंभ
उनक हो
आज

आपने पापों
के मानो
यीशु से

बानिती

करो





परमेश्वर व

र पतिता इन

नव

दम्प पत्नी

पर तेरी

आशीष

हो - इनके

जीवनों पर

तेरा

अनुग्रह

हो और

इनकी

समस्या पर

पवतिर

आत्मा मा

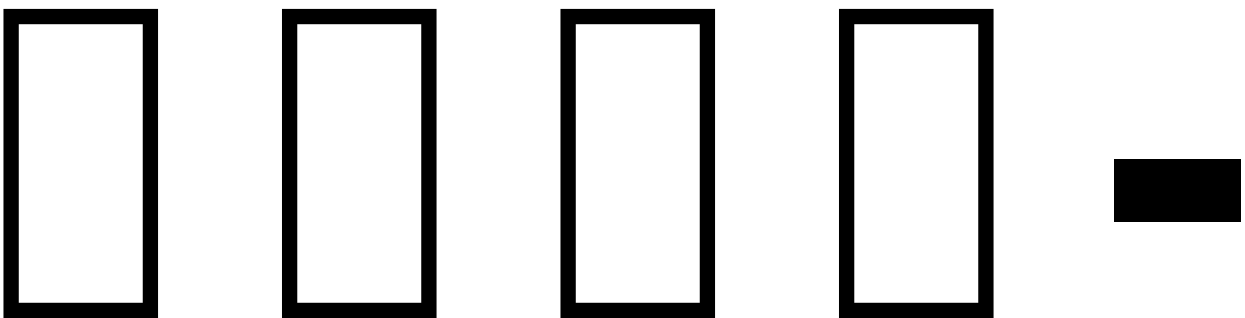
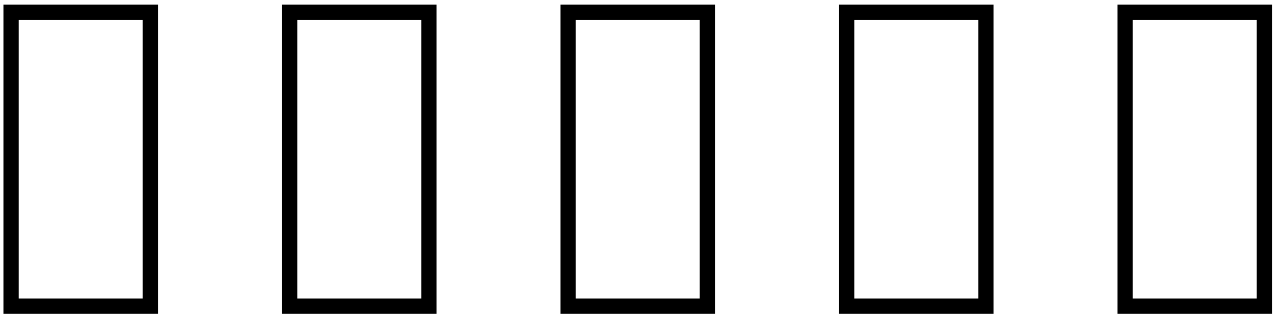
क

मार्गादर्श

न बना

रहे।

आमीन!



परमेश्वर व

र की शांति

जो सारी

समझ से

परे है

हमारे

हरदय

और

तुम्हारे

वचिारों के

परमेश्वर व

र और

उसके पत्र

हमारे परभू

यीशु

मस्सीह की

पहचान

और प्रेम

में स्थिति

रखे और

सर्वशक्ति

तमिान

परमेश्वर व

र पति,

परमेश्वर व

र पुत्र

और

परमेश्वर व

र

पवतिरात्

मा की

आशीष

तुम्हारे

मध्यय में

आज

सर्वदा लो

बनी रहे।

आमीन!

(वर आपने

दाहनि

हाथ में

वधु क

बायां हाथ

डालकर

बाहर

नक्शें

इस समय

करीबिया

खड़ी होकर

“

होगी

आशीषों

की वर्षा

”

क पहला

पद तथा

केरस गाँ

या केई

धन बजाई

जा)